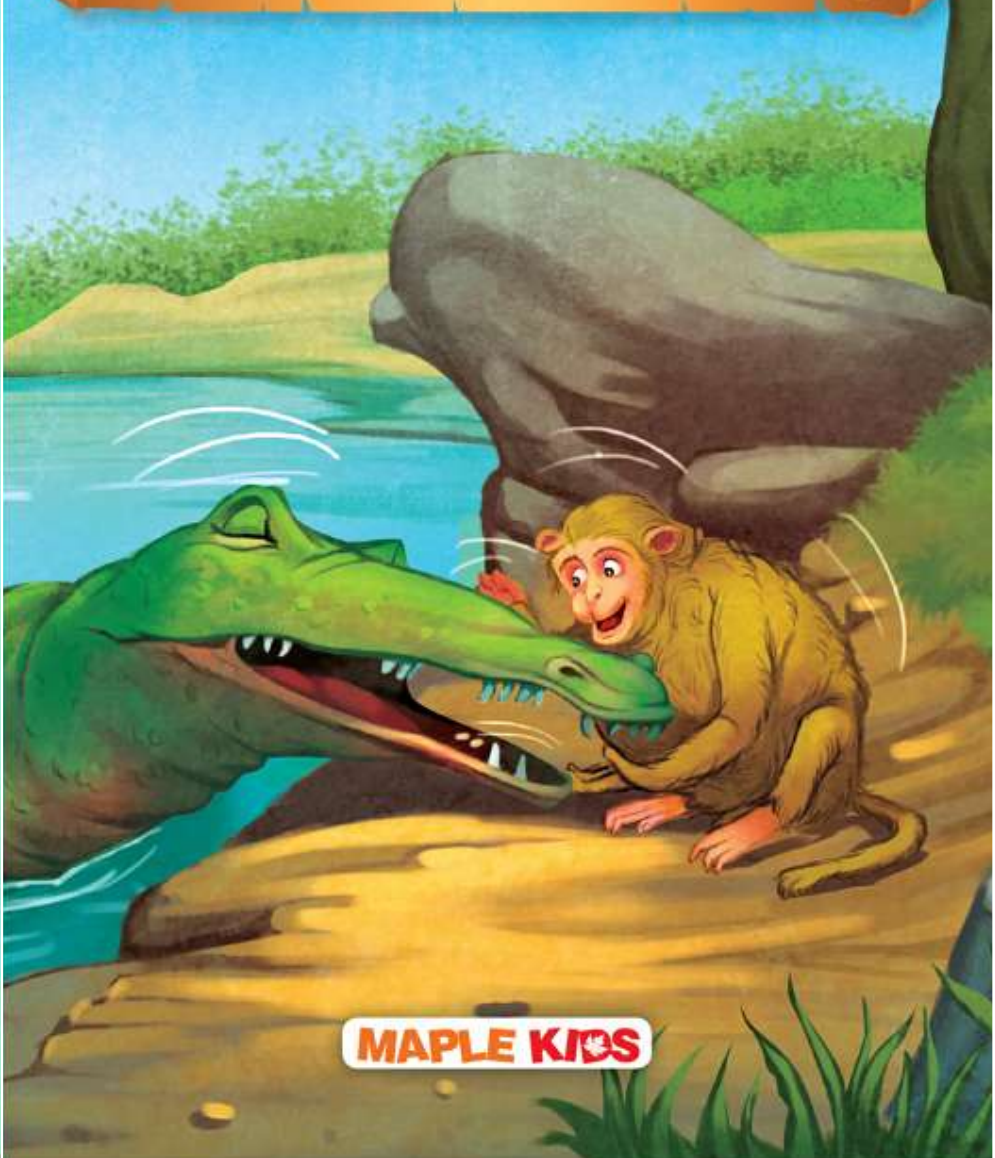


प्रसिद्ध सचित्र
जातक कथाएं



MAPLE KIDS

प्रसिद्ध

सचित्र

जातक कथाएं



Maple Press

Published by



Email: info@maplepress.co.in

Website: www.maplepress.co.in

Edition: 2015

Copyright © Maple Press

ALL RIGHTS RESERVED. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted in writing by the publisher.

Printed by Artxel, Noida

विषय-सूची

1. बुद्धिमान लड़का

2. सुनहरा हिरन

3. शक्तिशाली बैल

4. एकता में बल

5. चालाक सारस

6. चतुर बंदर

7. दयालु हाथी

8. दुष्ट राजकुमार

9. बौना धनुर्धारी

10. मोतियों का हार

11. नाम का अर्थ

12. बुद्धिमान बटेर

13. मूर्ख शिष्य

14. ढोंगी भेड़िया

15. विश्वासघाती मित्र

16. लालची औरत

17. घमंडी सियार

18. उत्तम गुण

19. शक्तिमान हाथी

बुद्धिमान लड़का

एक शहर में चौला नाम का बुद्धिमान अमीर था। एक बार जब वह राजा से मिलने जा रहा था, तब उसे सड़क पर मरा हुआ चूहा दिखाई दिया। वह ग्रह नक्षत्रों को देखते हुए बोला- "कोई तेज निगाहों वाला इस चूहे से भी धन कमा कर अमीर बन सकता है।"

उसी समय एक गरीब बुद्धिमान लड़का वहां से निकल रहा था। चौला के शब्द सुनकर उस लड़के ने सोचा, "जरूर इस अमीर आदमी ने अपनी मेहनत और बुद्धि से पैसा कमाया होगा, तभी वह यह बात सोचकर कह रहा होगा।"

यही सोचकर उसने मरा हुआ चूहा उठाया और बिल्लियों के भोजन की दुकान पर जाकर बेच दिया। चूहे के बेचने पर उसे एक सिक्का मिला। जिससे उसने गुड़ खरीदा। गुड़ और पानी लेकर वह बगीचे के उस रास्ते पर बैठ गया जहां से बहुत सारे माली काम करके बाहर निकलते थे। वह लड़का उनके गुड़ और पानी देता था और सब माली उसे एक-एक फूल देते थे, जिन्हें बेचकर वह और ज्यादा गुड़ खरीद लेता था।

अब वह वहीं बैठने लगा और सभी लेगा उसे पहचानने लगे थे। सभी माली उसे पौधे और फूल देते थे जिन्हें वह बेच देता था। इस तरह उसने आठ सिक्के कमा लिये।



एक दिन शहर में बहुत भयानक तूफान आया और सारा बगीचा सूखी पत्तियों और टहनियों से भर गया। सभी माली परेशान थे कि बगीचे को कैसे साफ किया जाय। उनकी परेशानी को समझकर लड़का बोला- "इस बगीचे को मैं साफ करूंगा। बदले में आप मुझे ये सारी सूखी पत्तियां और टहनियां दे देना।" सभी माली इस बात पर सहमत हो गये। लड़के ने पास में खेल रहे बच्चों को बुलाया और उनसे सारा बगीचा साफ करवा कर, सूखी टहनियों और पत्तियों का ढेर बंधवा कर बगीचे के बाहर रखवा दिया। बदले में उसने बच्चों को थोड़ा सा गुड़ दे दिया।

उसी समय एक कुम्हार वहां से जा रहा था। उसे मिट्टी के बर्तन पकाने के लिये सूखी लकड़ी और पत्तियों की जरूरत थी। उसने लड़के को सोलह सिक्के दिये और वह ढेर खरीद लिया। अब लड़के के पास सोलह सिक्के हो गये।

अब उस लड़के ने वहीं एक दुकान बना ली। जब माली अपने काम से लौटते तो वे उससे गुड़ और पानी लेते थे। सभी उससे

पूछते-तुम हमें गुड़ और पानी देते हो बदले में हम केवल फूल देते हैं। बताओ, हम तुम्हारे लिये और क्या कर सकते हैं? लड़का कहता समय आने पर बताऊंगा।

कुछ समय बाद एक व्यापारी अपने पांच सौ घुड़सवारों के साथ उस शहर में व्यापार करने के लिए आया। जब लड़के को इस बात का पता चला तब उसने सभी मालियों से कहा कोई भी घास न बेचे और एक-एक गट्टर घास उसे दे दे। सभी ने उसकी बात मान ली।

जब व्यापारी वहां आया तब उसे घोड़ों को खिलाने के लिये घास की जरूरत पड़ी। उसने लड़के को हजार सिक्के दिये और उसने वह घास खरीद ली।

कुछ समय बाद, बन्दरगाह में काम करने वालों से लड़के को पता चला कि कुछ बड़े व्यापारी समुद्री जहाजों में कीमती सामान लेकर, व्यापार करने के लिये आ रहे हैं। वह लड़का इस सुनहरे मौके को खोना नहीं चाहता था। उसने बहुत सुन्दर बगगी तथा कुछ सेवक किराये पर लिए। वह बड़े ठाठ-बाट से बगगी में बैठकर तम्बू में गया और अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वे इस बड़े दरवाजे से एक-एक करके व्यापारियों को अन्दर लायें। जब व्यापारियों को पता चला कि वहां एक बहुत बड़ा व्यापारी है तब बाहर वाले व्यापारी उससे मिलने पहुंचे। सेवकों ने एक-एक करके उन्हें अन्दर पहुंचाया तथा लड़के से मिलवाया। व्यापारी लड़के के ठाठ-बाट देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अपना सामान उसे बेच दिया। जब शहर के अन्य व्यापारियों को इस बात का पता चला, तब वे वहां पहुंचे। परंतु तब तक तो सारा सामान वह लड़का उनसे खरीद ही चुका था। व्यापारियों को अब उसी से सामान खरीदना पड़ा। इस तरह उसने बहुत सारा धन कमाया।

इस तरह वह लड़का एक अमीर आदमी बन गया। उसने वह सब कुछ पा लिया जो वह चाहता था। अब उसने सोचा, मुझे उस व्यक्ति को धन्यवाद देना चाहिये, जिसने मुझे सही रास्ता दिखाया था। वह कुछ धन और उपहार लेकर चौला के पास पहुंचा और बोला कृपया आप यह स्वीकार कीजिए। चौला ने लड़के से पूछा- "यह सब तुम मुझे क्यों देना चाहते हो?"

लड़के ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया- "यह सब मैंने आपके ही आशीर्वाद से कमाया है।" और उसने चौला को मरे चूहे से लेकर अब तक की सारी बात बताई। चौला सब सुनकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने अपनी लड़की का विवाह उस लड़के से करके उसे अपना दामाद बना लिया। चौला की मृत्यु के बाद वह चौला की सारी सम्पत्ति का मालिक बन गया।

शिक्षा: बुद्धिमान अपनी बुद्धि के बल पर कहीं भी पहुंच सकता है।

सुनहरा हिरन

एक जंगल में एक सुनहरा हिरन अपने पांच सौ साथियों के साथ रहता था । उसके सिंग चांदी की तरह सफेद, पूंछ याक की तरह और शरीर एक बछड़े के समान था । वह जंगल जिस राज्य में था , उसके राजा को हिरन का मांस बहुत पसंद था ।

वह राजा प्रतिदिन अपने सैनिकों के साथ शिकार के लिये जाता और एक हिरन मारकर अपने खाने के लिये लाता था । सभी लोग राजा की इस आदत से परेशान थे । उन्होंने सोचा कि जंगल के सारे हिरनों को इकट्ठा करके राजा के बगीचे में बंद कर दिया जाए ।

सभी लोग राजा के पास पहुंचे और कहा - "महाराज ! प्रतिदिन शिकार पर जाने से समय खराब होता है और काम का भी नुकसान होता है । इसलिये हमने आपके बगीचे में हिरनों को बंद कर दिया है । अब आपको शिकार के लिये प्रतिदिन जंगल नहीं जाना पड़ेगा और खाने के लिये हिरन भी मिल जाएगा । "

इस प्रकार लोग प्रतिदिन शिकार पर जाने से बच गये । वह सभी बहुत खुश थे । राजा ने जब बगीचे में उन हिरनों के बीच एक सुनहरे हिरन को देखा तो वह उसे बहुत पसंद आया । राजा ने सुनहरे हिरन को जीवन - दान दे दिया ।

अब राजा प्रतिदिन बगीचे में अपना धनुष - बाण लेकर जाता और एक हिरन को मारकर ले आता । जब राजा बगीचे में जाता तो उसे देखकर हिरनों में भगदड़ मच जाती , जिससे एक - दो

हिरन और मर जाते थे । यह देखकर सारे हिरन , सुनहरे हिरन के पास जाकर बोले - "जब हमें मरना ही है तो हम राजा के तीर से क्यों मरें ? हम एक - एक करके अपने आप ही राजा के पास चले जाएंगे । "

सुनहरे हिरन ने यह बात राजा को कही तो राजा इस बात पर सहमत हो गया । इस प्रकार एक - एक करके हिरन राजा के पास जाने लगे । एक बार एक गर्भवती हिरनी कि बारी आई । वह सुनहरे हिरन के पास गई और कहने लगी - "आज मेरी बारी है । मैं और मेरा बच्चा दोनो ही मारे जाएंगे । इसलिये आज आप मेरे बदले किसी और को भेज दीजिये । "



सुनहरे हिरन ने उससे कहा - " जाओ ,तुम आराम करो । " और वह खुद ही राजा के पास चला गया । राजा ने उसको देखकर कहा हमने तो तुम्हें जीवन दान दिया है फिर तुम यहां क्यों आये हो ?

सुनहरे हिरन ने उत्तर दिया - " महाराज ! आप बुरा न माने , आज एक गर्भवती हिरनी की बारी थी । उसको और उसके बच्चे को बचाने के लिये , मैंने अपना त्याग किया है । "

राजा ने कहा - "मेरे प्यारे हिरन , मैंने आज तक इतना दयालु हिरन कहीं नहीं देखा । मैं तुम्हारी इस दयालुता पर प्रसन्न हूँ । मैं गर्भवती हिरनी को भी जीवन - दान देता हूँ । "

हिरन बोला - "महाराज ! हिरन तो जंगल में भी हैं ? "

राजा बोला - " मेरे प्यारे हिरन ! मैं जंगल के सारे हिरनों को भी जीवन - दान देता हूँ । "



सुनहरा हिरन बोला - "क्या आप केवल हिरनों को या अन्य सभी जंगली जानवरों को भी जीवन - दान देंगे ?"

राजा बोला - " मैं सभी जानवरों को जीवन - दान देता हूँ । "

हिरन बोला - " क्या पक्षियों को भी ? "

राजा बोला - " हां , मैं सभी छोटे - बड़े पशु - पक्षियों को जीवन - दान देता हूँ । "

हिरन ने राजा को धन्यवाद दिया । इस प्रकार उसने सारे पशु - पक्षियों को बचा लिया । तब वे राजा के बगीचे से जंगल में चले गये और आजाद होकर खुशी से रहने लगे ।

शिक्षा : त्याग का फल मीठा होता है ।

शक्तिशाली बैल

एक गरीब ब्राह्मण था। एक दिन दक्षिणा में उसे एक बछड़ा मिला। उसने उसे बहुत प्यार से अपने बेटे की तरह पाला-पोसा। वह ब्राह्मण उसे बेटा कहकर बुलाता था। उसने उसका नाम 'नंदी विशाल' रखा।

बछड़ा बड़ा होने पर एक शक्तिशाली और सुन्दर बैल बन गया। एक दिन नंदी विशाल ने सोचा, "मेरे मालिक ने मुझे अपने बच्चे की तरह बड़ी मेहनत से पाला है, इसलिए मुझे भी उनके लिये कुछ करना चाहिए।"

कुछ समय बाद नंदी विशाल ने अपने मालिक से कहा - "मालिक, आप ऐसे अमीर आदमी के पास जाओ जिसके पास सौ बैलगाड़ियां हों। उससे कहो की मेरे पास एक ऐसा बैल है, जो तुम्हारी सौ बैलगाड़ियों को उनमें रखे समान सहित, अकेला ही खींच सकता है। अगर उसे विश्वास न हो तो आप उससे एक हजार सिक्कों की शर्त लगा लेना।"

जब ब्राह्मण ने नंदी की बात सुनी तो वह उसे ठीक लगी। वह एक अमीर आदमी के पास पहुंचा। उसने अमीर आदमी से कहा, "आप को क्या लगता है कि सबसे ताकतवर बैल किसके पास होगा?" अमीर आदमी ने बड़े गर्व से कहा, "मेरे सिवाय इस पूरे गांव में सबसे ताकतवर बैल रखने की कोई हैसियत नहीं रखता।" अमीर को उसकी बात पर विश्वास ही नहीं हुआ और उसने ब्राह्मण से एक हजार सिक्कों की शर्त लगा ली।



ब्राह्मण ने नंदी विशाल को नहला—धुलाकर तैयार किया और गले में ताजे फूलों की माला पहना, सामान से लदी सौ गाड़ियों में जोत दिया। ब्राह्मण ने बहुत ही घमंड से कहा—"चल दुष्ट बैलगाड़ियां खिंच।"

नंदी विशाल को यह सुनकर अच्छा नहीं लगा और व सोचने लगा कि मालिक ने मुझे दुष्ट क्यों कहा? उसने गाड़ियां नहीं खींची। ब्राह्मण बार-बार कहता रहा, परन्तु नंदी विशाल वहीं पैरों को जमा कर खड़ा रहा।

अब ब्राह्मण क्या करता, उसने हार मान ली और अमीर आदमी को एक हजार सिक्के देकर वहां से चुपचाप घर की ओर चल दिया। नंदी विशाल भी उसके पीछे-पीछे चल दिया।

घर पहुंच कर ब्राह्मण ने नंदी विशाल से कहा—"आज तुम्हारे कारण मुझे एक हजार सिक्कों का नुकसान हो गया।" नंदी विशाल ने कहा—"मालिक, मैं बचपन से ही आपके साथ हूँ, क्या

मैंने कभी कोई नुकसान किया, किसी को सिंग मारा, कोई चीज तोड़ी या कहीं कोई गंदगी की?"

ब्राह्मण ने कहा - "नहीं बेटा, ऐसे तो कुछ नहीं हुआ । "

नंदी ने कहा, "फिर अपने मुझे दुष्ट क्यों कहा, मेरा अपमान क्यों किया? मुझे बुरा लगा और मैंने गाड़ियां नहीं खिंची। अब आप फिर से उस अमीर आदमी के पास जाकर दो हजार सिक्कों का शर्त लगायें। मैं गाड़ियां खिचूंगा, परंतु आप मुझे दुष्ट नहीं कहना। "

नंदी विशाल की बात समझ, ब्राह्मण अमीर आदमी के पास गया। अमीर आदमी ने खुशी-खुशी दो हजार सिक्कों की शर्त मान ली। ब्राह्मण ने फिर से नंदी को नहला-धुलाकर, गले में घंटियां बांद कर, फूल-माला पहनाई गई। उसे गाड़ियों में जोतकर ब्राह्मण ने बहुत ही प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा-"नंदी बेटे, गाड़ियों को खींच कर अपना शक्ति दिखाओ। "

नंदी विशाल अपने मालिक के प्यार भरे शब्द सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने बहुत शान से गाड़ियों को खींच कर दिखा दिया। इस बार अमीर आदमी अपने दो हजार सिक्के हार गया। उसने ब्राह्मण को दो हजार सिक्के दिये और नंदी विशाल को शाबाशी दी। इस प्रकार ब्राह्मण का नुकसान पूरा हो गया और एक हजार सिक्के का लाभ भी।

शिक्षा : जब भी बोलो, मिठा बोलो, कड़वा नहीं ।



एकता में बल

एक जंगल में बहुत सारी बटेर रहा करती थीं। एक बार एक शिकारी की नजर उन पर पड़ी। उसने दाना डालकर जाल फेंका जिससे कुछ बटेर जाल में फंस गईं। शिकारी ने उन्हें ले जाकर बाजार में बेच दिया। इस प्रकार वह प्रतिदिन बटेरों को पकड़ता और बाजार में बेच देता, जिससे उसकी अच्छी कमाई होने लगी।

जंगल में अब बटेरों की संख्या कम होने लगी। तब मुखिया बटेर ने सबको इकट्ठा किया और कहा कि यह शिकारी हमको पकड़कर हमारी संख्या कम करता जा रहा है। मेरा एक सुझाव है अगर सभी बटेर मान लें तो यह शिकारी कभी किसी बटेर को नहीं पकड़ सकेगा।

सारी बटेर मुखिया की बात को ध्यान से सुनने लगीं। उसने कहा-“जब शिकारी जाल फेंके तब तुम सभी अपनी चोंच में जाल का धागा फंसाना और जाल लेकर उड़ जाना। उस जाल को तुम झाड़ियों में छोड़ देना। जब जाल उनमें फंस जायेगा, तब तुम उसमे से निकल जाना।”

सभी बटेर मुखिया की बात समझ गयीं और उन्होंने तय किया कि वह मुखिया के कहने के अनुसार ही करेंगी।

शिकारी आया, उसने जाल फेंका और बहुत सारी बटेर उसमें फंस गयीं। उन्होंने मुखिया की बात याद रखी और जाल को झाड़ियों में फंसाकर सब जाल से निकल कर उड़ गये।



शिकारी देखता ही रह गया। वह उनके पीछे भागा भी परन्तु उसके हाथ कुछ भी नहीं लगा। उसका जाल भी झाड़ियों में फंसकर फट चुका था।

अब बटेर ऐसा ही करने लगी। शिकारी को खाली ही घर लौटना पड़ता था। शिकारी के घर में खाने की भी परेशानी होने लगी, तब शिकारी की पत्नी ने कहा-“आप प्रतिदिन खाली हाथ आते हैं, अपना पैसा कहां दे आते हैं।”

शिकारी ने कहा -“प्रिय! मैं पैसा कहीं भी नहीं दे कर आता। क्या करूं? आजकल बटेरों में एकता हो गई है। वह सब मेरा जाल ही लेकर उड़ जाती हैं। जिस दिन उनमें एकता समाप्त हो जाएगी, उसी दिन से मैं खाली हाथ घर नहीं आऊंगा। तुम चिंता मत करो।”



एक दिन बटेर दाना चुग रही थीं कि अचानक एक बटेर दूसरे से टकरा गई। उस बटेर ने गुस्से से दूसरी बटेर से पूछा-“तुम मुझ पर क्यों कूदी?” दोनों आपस में लड़ने लगे। उन्हें देखकर बाकी बटेर भी शोर मचाने लगीं और एक दूसरे से कहने लगीं-“ क्या तुम जाल उठा सकती हो?”

यह सब देखकर मुखिया बटेर ने उनको समझाने की कोशिश की पर किसी ने भी उसकी बात नहीं सुनी, न ही मिलकर रहीं। लड़-झगड़कर सब अलग हो गयीं। तब मुखिया बटेर अपने कुछ साथियों के साथ जंगल में चली गई।

कुछ दिनों बाद शिकारी आया और उसने दाना डालकर जाल फेंका। बटेर जाल में आ गयीं। एक ने दूसरे से कहा, तुम जाल उठाओ, दूसरे ने तीसरे से कहा, तुम जाल उठाओ। सब आपस में यही कहते रहे, पर किसी ने भी जाल नहीं उठाया। शिकारी ने बहुत ही आसानी से उनको पकड़ लिया और बाजार में बेच दिया।



बटेरों में एकता नहीं रही, इसलिये वह शिकारी के हाथों पकड़े गये। अगर उन्होंने मुखिया बटेर की बात मान ली होती, तब उन्हें यह दिन नहीं देखना पड़ता।

शिक्षा: एकता में बल है।

चालाक सारस

किसी जंगल में अनेक जल के प्राणियों से भरा एक तालाब था । वहां रहने वाला एक बगुला बूढ़ा होने के कारण मछलियों को पकड़ने में असमर्थ हो गया । भूख से व्याकुल होकर वह नदी के किनारे बैठकर रोने लगा । उसी समय एक केकड़े ने उसे रोता देखकर पूछा- "मामा! आज तुम रो क्यों रहे हो ?" वह बोला- "तुमने ठीक देखा । अब मछलियों को खाने में मुझे बहुत वैराग्य हो गया है और मैंने मरने का व्रत ले लिया है । अब मैं पास में आयी हुई मछलियों को भी नहीं खाऊंगा ।"



यह सुनकर केकड़ा बोला- "मामा! तुम्हारे वैराग्य का कारण क्या है ?" वह बोला- "आज मैंने ज्योतिषी से सुना है कि अगले बारह साल एक बारिश नहीं होगी । इस तालाब का पानी जल्दी सुख जाएगा । जिससे सारे प्राणी नष्ट हो जायेंगे । मैं उनका वियोग

सहन करने में असमर्थ हूं। इसी कारण मैंने यह मरने का व्रत किया है। इस समय छोटे तालाब के सभी प्राणी अपने परिवार को बड़े तालाबों में ले जा रहे हैं। परंतु इस तालाब के प्राणी निश्चित हैं।"



यह बात सुनकर केकड़े ने दूसरे प्राणियों से उसकी बात बताई। डर से व्याकुल होकर सारे प्राणी उसके पास आकर पूछने लगे- "मामा! क्या हमारे बचने का कोई उपाय है?" बगुला बोला- "इस तालाब से थोड़ी ही दूरी पर बहुत पानी से भरा एक तालाब है। जो चौबीस साल बारिश न होने पर भी नहीं सूखेगा। इसलिये यदि कोई मेरी पीठ पर चढ़े तो मैं उसे वहां ले जाऊं।" उसकी बात का विश्वास करके चिल्लाते हुए सब उसके चारों ओर जमा हो गये। तब उस दुष्टात्मा बगुले ने कुछ पीठ पर चढ़ा लिया और तालाब से थोड़ी दूर जाकर चट्टान पर रखकर अपनी इच्छानुसार खा लिया। इस प्रकार वह अपनी आजीविका चलाने लगा। एक दिन केकड़े ने कहा- "मामा! पहले मेरे साथ आपकी बात हुई थी, परंतु आप मुझे छोड़कर दूसरे प्राणियों को क्यों ले जा रहे हैं? आज आप मुझे ले चलिए।" बगुले ने केकड़े को पीठ पर चढ़ा लिया और उस चट्टान की ओर चल दिया। केकड़ा दूर से उस चट्टान के आस-पास मछलियों की हड्डियों का ढेर देखकर

उससे पूछने लगा- "मामा! वह तालाब कितनी दूर है ?" वह मूर्ख बगुला भी ऐसा समझकर कि यह भी जल में रहने वाला प्राणी है और जमीन में बलवान नहीं होगा, हंसता हुआ बोला- "दूसरा कोई तालाब नहीं है यह मेरी जीविका का साधन है, तुमको भी मैं इसी चट्टान पर रखकर खा जाऊंगा "। उसके यह कहने पर केकड़े ने अपने दोनों दांतों से उसकी गरदन दबा दी, जिससे वह मर गया। उस बगुले की गरदन को काटकर लिये हुए वह धीरे-धीरे अपने तालाब में पहुंचा। तालाब के रहने वालों ने पूछा- "तुम क्यों लौट आये ? मामा अभी नहीं लौटे। वे देर क्यों लगा रहे हैं। हम बहुत उत्सुकता से हर क्षण उनका इंतजार कर रहे हैं।" उनके ऐसा कहने पर केकड़े ने कहा- "उस झूठे बगुले ने हमें ठगकर थोड़ी ही दूर एक चट्टान पर यहां के सभी प्राणियों को खा डाला है। आयु शेष होने के कारण मैं उस विश्वासघाती का उद्देश्य जानकर उसकी गर्दन काटकर ले आया हूं।

शिक्षा : ज्यादा चालाकी से अपना नुकसान भी हो सकता है।

उससे पूछने लगा- "मामा! वह तालाब कितनी दूर है ?" वह मूर्ख बगुला भी ऐसा समझकर कि यह भी जल में रहने वाला प्राणी है और जमीन में बलवान नहीं होगा, हंसता हुआ बोला- "दूसरा कोई तालाब नहीं है यह मेरी जीविका का साधन है, तुमको भी मैं इसी चट्टान पर रखकर खा जाऊंगा "। उसके यह कहने पर केकड़े ने अपने दोनों दांतों से उसकी गरदन दबा दी, जिससे वह मर गया। उस बगुले की गरदन को काटकर लिये हुए वह धीरे-धीरे अपने तालाब में पहुंचा। तालाब के रहने वालों ने पूछा- "तुम क्यों लौट आये ? मामा अभी नहीं लौटे। वे देर क्यों लगा रहे हैं। हम बहुत उत्सुकता से हर क्षण उनका इंतजार कर रहे हैं।" उनके ऐसा कहने पर केकड़े ने कहा- "उस झूठे बगुले ने हमें ठगकर थोड़ी ही दूर एक चट्टान पर यहां के सभी प्राणियों को खा डाला है। आयु शेष होने के कारण मैं उस विश्वासघाती का उद्देश्य जानकर उसकी गर्दन काटकर ले आया हूं।

शिक्षा : ज्यादा चालाकी से अपना
नुकसान भी हो सकता है।

चतुर बंदर

एक चालाक बंदर था। वह अपने गुट में सबसे शक्तिशाली था। एक दिन वह नदी किनारे उछल-कूद रहा था तभी उसे नदी में एक टापू दिखाई दिया। वह नदी में पड़ी चट्टान के ऊपर कूदा और दूसरी ही छलांग में चट्टान से कूद कर टापू पर पहुंच गया।

टापू में बहुत सुंदर बगीचा था। जिसमें आम और जामुन के साथ-साथ और भी बहुत सारे फलों के पेड़ थे। उसे वह बगीचा बहुत पसंद आया। उसने निश्चय किया कि अब वह रोज यहां आकर अपनी भूख शांत करेगा।

इस तरह वह रोज उस टापू पर जाने लगा। वह दिन भर खाता-पीता, खेलता और शाम को अपने घर लौट जाता। उस नदी में एक मगरमच्छ अपने परिवार के साथ रहता था। उस मगरमच्छ की पत्नी बन्दर को आते-जाते देखा करती थी।

बन्दर को देखकर वह सोचती थी कि, "यह रोज मीठे-ताजे फल खाता है, इसका दिल भी जरूर इतना ही मीठा होगा।" यह सोचकर उसने मगरमच्छ से कहा-"प्रिय! मैं इस बन्दर का दिल खाना चाहती हूं।"

मगरमच्छ ने कहा -"बहुत अच्छा! मैं बन्दर को पकड़ने का उपाय करता हूं।" उसने सोचा, "मैं चट्टान के पीछे छिप जाता हूं। जैसे ही बन्दर चट्टान पर कूदेगा, मैं उसे पकड़ लूंगा।" बन्दर फल खाकर टापू से वापस आने के लिये, जैसे ही चट्टान पर कूदने लगा, वैसे ही उसे लगा कि चट्टान कुछ ऊंची कैसे हो गई है, जबकि पानी भी

कम नहीं हुआ था। उसने सोचा, "क्या कहीं कोई मुझे पकड़ने के लिये छिपा तो नहीं है? कहीं यह मगरमच्छ तो नहीं है?"



उसने चतुराई से काम किया और आवाज लगाई - "ओ चट्टान! ओ चट्टान! " उसको कोई भी जवाब नहीं मिला। वह दुबारा चिल्लाया - "ओ चट्टान! क्या आज तुम मुझसे बात नहीं करोगी?" मगरमच्छ ने सोचा, "बन्दर शायद रोज चट्टान से बात करता होगा। चट्टान उसे जवाब देती होगी।" वह आवाज बदल कर बोला- "हे बन्दर तुम क्या चाहते हो?"

बन्दर समझ गया और बोला- "तुम कौन हो?"

आवाज आई-"मैं मगरमच्छ हूं। "

बन्दर ने कहा-"तुमने पहले झूठ क्यों बोला? तुम क्या चाहते हो?"

मगरमच्छ ने कहा-"मेरी पत्नी तुम्हारा दिल खाना चाहती है। तुम्हें मारकर, मैं तुम्हारा दिल निकालना चाहता हूं। " बन्दर ने सोचा कि टापू से बाहर निकलने को कोई रास्ता नहीं है और यह मगरमच्छ मुझे मारना चाहता है। मुझे इससे बचकर यहां से निकलने का कोई उपाय करना चाहिये।

बन्दर ने उससे कहा-"ओ प्यारे मगरमच्छ! मैं खुद को तुम्हें सौंपता हूं। अपना मुंह खोलो। "

बन्दर के कहने पर उसने अपना पूरा मुंह खोल लिया और यह भूल गया कि ऐसा करने पर उसकी आंखें बन्द हो जाएंगी। वह कुछ भी नहीं देख पाएगा।

बन्दर उसके सिर पर कूदा और दूसरी ही छलांग में किनारे पर पहुंच गया।

मगरमच्छ को अपनी गलती समझ में आ गई। वह बन्दर की बुद्धिमानी की प्रशंसा करते हुए बोला -"ओ बन्दर राजा। चार अच्छाईयां सभी में होनी चाहिये, जो कि तुममे हैं। जैसे सच्चाई, सोचने की शक्ति, मेहनत से काम करना और आत्म-त्याग। तुमने कहा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा। यह तुम्हारी सच्चाई थी कि तुम मेरे पास आए। तुमने कहा मुंह खोल लो, यह तुम्हारी सोचने की शक्ति थी कि इस प्रकार मेरी आंखें बन्द हो जाएंगी और मैं तुम्हें देख ही नहीं पाऊंगा। तुम्हारी मेहनत से काम करने की इच्छा थी। तुम चमकती बिजली के समान मुझ पर कूद कर उस पार चले गये। तुममे आत्म-त्याग की भावना थी, अगर तुम ठीक से मेरे सिर

पर नहीं कूद पाते तो मर भी सकते थे। तुम बहुत ही चतुर और शक्तिशाली हो। यह मेरी गलती थी कि मैंने तुम्हें मारना चाहा!"

यह कह कर मगरमच्छ पानी में चला गया।

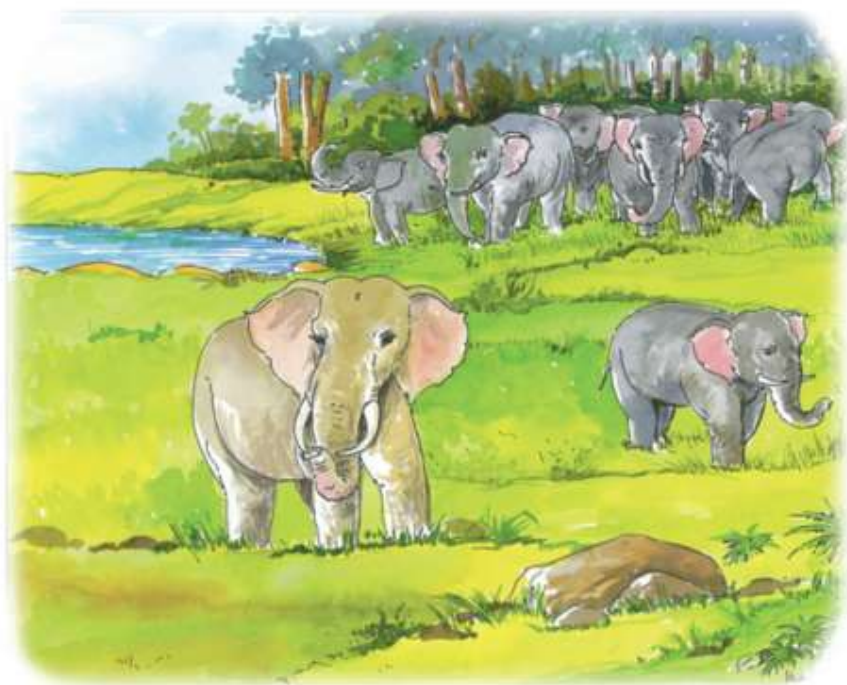
शिक्षा: मुसीबत के वक्त हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये बल्कि बुद्धि और संयम से काम लेना चाहिये।

दयालु हाथी

हिमालय के जंगलों में एक सफेद हाथी रहता था। उसके बहुत बड़े-बड़े दांत थे। उसकी आंखें इस तरह थीं जैसे कि दो नगीने जड़े हों। उसका मुंह लाल था और सूंड सोने के चमकते भाले के समान थी। उसकी टांगें इस प्रकार लगती कि जैसे उन पर मोम लगाया गया हो। वह देखने में सबसे सुन्दर लगता था। सारे हिमालय में उस जैसा कोई भी हाथी नहीं था। वह सब हाथियों का मुखिया था।

वह बहुत समय तक मुखिया बने-बने थक गया था। उसने दूसरे हाथी को मुखिया बनाया और अपना जीवन दूसरों की सहायता करने के लिये तथा कुछ पल एकान्त में रहने के लिये वह घने जंगलों में चला गया।

एक बार एक आदमी अपना रास्ता भूलकर घने जंगलों में भटक गया और जोर-जोर से रोने लगा। जब सफेद हाथी ने उसका रोना सुना, तो वह उसके सामने गया। आदमी डर के मारे भागने लगा। हाथी समझ गया कि वह आदमी उससे डर रहा है। हाथी रुक गया। अब आदमी समझ गया कि हाथी उसे मारना नहीं चाहता है। हाथी ने धीरे-धीरे आदमी के पास पहुंच कर कहा- “डरो नहीं”, और उसने आदमी को बहुत मीठे फल खिलाये। जब आदमी का पेट भर गया और उसने कुछ पल आराम भी कर लिया तब हाथी ने आदमी से कहा- “चलो अब मैं तुम्हें जंगल से बाहर छोड़ आता हूं।” हाथी ने उसे अपनी पीठ पर बैठा लिया। रास्ते में हाथी ने कहा कि तुम शहर में किसी को भी मेरे बारे में मत बताना।



पर वह आदमी बहुत चालाक था। उसके मन में यह लालच आ गया कि किसी भी तरह हाथी के दांत उसे मिल जाएं। उसने सोचा जंगल में फिर आना पड़ेगा। इसलिये जंगल के रास्ते पहचानने के लिये वह कुछ-न-कुछ निशानी बनाने लगा। हाथी ने आदमी को जंगल के बाहर छोड़ दिया और वापिस जंगल में लौट आया।

शहर में लौट कर आदमी सीधा हाथी दांत के बाजार में गया। एक दुकान पर पहुंच कर उसने दुकान के मालिक से पूछा- “भाई! क्या तुम जिंदा हाथी के दांत खरीदोगे?”

दुकानदार ने कहा- “क्या कह रहे हो भाई? जिंदा हाथी के दांत? अरे! वह तो बहुत कीमती होते हैं! कहां हैं, लाओ? मैं उन्हें खरीदूंगा।”



लालची आदमी ने एक आरी खरीदी और जंगल में पहुंच गया। आदमी को देखकर हाथी ने पूछा- “अब तुम यहां क्यों आ गये?” आदमी बोला- “ मैं बहुत गरीब हूं। अगर तुम मुझे अपना आधा दांत दे दो तो मैं उसे बेचकर कुछ धन कमा लूंगा और अपना जीवन काट लूंगा। “

हाथी बोला- “ ठीक है। तुम आधा दांत ले लो, पर मैं अपना दांत कैसे निकालूंगा?”

आदमी बोला- “दांत काटने के लिये , मैं आरी अपने साथ लेकर आया हूं। “

दयालु हाथी सूंड़ ऊपर उठाकर बैठ गया और आदमी ने आधा दांत काट लिया। हाथी ने कहा- “यह मत समझना कि मुझे अपना दांत प्रिय नहीं है, इसलिये मैं अपना दांत तुम्हें दे रहा हूं। यह मेरे बहुत काम आता है, परंतु फिर भी तुम्हारी सहायता करने के लिये मैं ऐसा कर रहा हूं। “

इस प्रकार हाथी ने अपना दांत देकर उस आदमी को जंगल के बाहर छोड़ दिया। वह आदमी खुशी-खुशी, हाथी दांत के बाजार गया और दांत को बेच दिया। दांत बेचकर उसने जो धन कमाया, उसे बुरे कामों में बरबाद कर दिया। कुछ समय बाद सारा धन समाप्त हो गया। वह लालची-दुष्ट आदमी फिर से हाथी के पास पहुंच गया और रोते हुए बोला- 'दांत बेचकर मैंने जो धन कमाया था, वह तो कर्ज चुकाने में ही समाप्त हो गया। अगर तुम मुझे और दांत दे दो, तो मैं तुम्हारा एहसान मानूंगा।'

हाथी ने दुबारा उसके दांत दे दिया। उस आदमी ने फिर से सारा धन शराब और जुएं में उड़ा दिया और फिर से हाथी के पास दांत मांगने के लिये पहुंच गया। वह हाथी से बोला- "तुमने जो दांत दिया उससे मेरे सभी काम पूरे नहीं हो सके। अगर तुम मुझे अपना दूसरा दांत भी दे दो तो मेरे सारे कष्ट दूर हो जायेंगे।" हाथी ने उस पर दया करते हुए दूसरा दांत भी दे दिया।

लालची आदमी ने अपने स्वार्थ के पूरा होने पर भी हाथी के त्याग को नहीं समझा आदमी जैसे ही जंगल से बाहर जाने लगा, सारी पृथ्वी हिलने लगी। धरती इस पापी के बोझ को नहीं सह पा रही थी। धरती जगह-जगह पर फटने लगी। वह दुष्ट पापी को अपने में समेटना चाहती थी ताकि वह लालची आदमी फिर से अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये कोई पाप न करे।

शिक्षा: स्वार्थी व्यक्ति कभी भी संतुष्ट नहीं होते हैं।
इसलिए पृथ्वी भी उनका बोझ नहीं उठा सकती है।

दुष्ट राजकुमार

एक बहुत दुष्ट स्वभाव का राजकुमार था। वह सबको तंग करता, सभी से कड़वा बोलता, सभी का अपमान करता था। उसे दूसरों को नीचा दिखाने में बहुत खुशी होती थी। उसे कोई भी पसन्द नहीं करता था। सभी लोग उसे दुष्ट राजकुमार कहते थे।

एक बार वह अपने सेवकों के साथ नदी पर नहाने के लिये गया। अचानक आसमान में बहुत काले बादल छा गये। चारों ओर अंधेरा छा गया। कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था। सेवक राजकुमार को वहीं छोड़कर किनारे पर आ गये।

सेवक राजमहल पहुंचे, तो राजा ने सेवकों से पूछा-"मेरा पुत्र कहाँ है।" उन्होंने कहा-"महाराज, हमें नहीं मालूम। सब जगह अंधेरा छा गया था, हम राजकुमार को नहीं देख पाये। हो सकता है, राजकुमार नदी में तैरते हुए आगे निकाल गये हों।" राजा ने सभी सेवकों को आज्ञा दी कि शीघ्र ही राजकुमार को ढूँढा जाये।

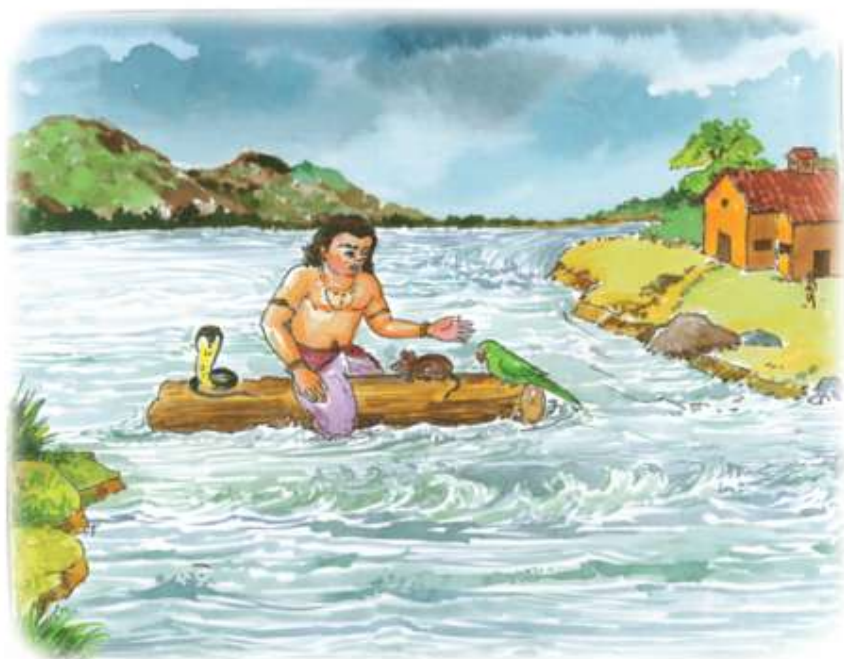
उधर राजकुमार नदी के तेज बहाव में बहता हुआ बहुत दूर नीकल गया। नदी में उसे एक पेड़ का तना बहता हुआ मिला। उसने उसे पकड़ लिया और उस पर बैठ गया। इसी प्रकार बहते-बहते एक सांप, एक चूहे और तोते ने भी उस पेड़ को पकड़ लिया और उस पर बैठकर जोर-जोर से चिल्लाने लगे-"बचाओ-बचाओ! नदी के किनारे एक तपस्वी, तपस्या कर रहे थे। उन्होंने उनकी आवाज सुनी। वह दौड़ कर गए और उन्हें देख कर बोले-"डरो नहीं, मैं आ रहा हूं।" तपस्वी नदी में कूद गए और पेड़ के तने को खींच कर किनारे ले आए। फिर वह सबको अपनी कुटिया पर ले गए और

कुछ खाने-पीने के लिये दिया। उन सबको कुछ गर्मी मिले, यह सोचकर उन्होंने कुटीया के एक कोने में थोड़ी सी आग भी जला दी।



राजकुमार तपस्वी से नाराज हो गया कि उन्होंने पहले सब जानवरों को ही खाने को क्यों दिया। मुझे क्यों नहीं दिया। तपस्वी ने मेरा अपमान किया है।

तपस्वी ने कुछ दिनों तक उन्हें अपने पास रखा। जब वह स्वस्थ होकर घर वापिस जाने लगे, तब सांप ने तपस्वी को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने मेरी जान बचाई है। मैं आपको सोने के सौ सक्के दूंगा। तोते ने कहा कि मैं आपको चावल दूंगा। चूहा बोला-"महाराज, जब आप मेरे घर आयेंगे, तब मैं आपका बहुत स्वागत करूंगा।" दुष्ट राजकुमार तो कोई एहसान मानने वाला नहीं था। उसने मन-ही-मन सोचा, जब यह मेरे पास आयेंगे तब मैं इसे जान से मरवा दूंगा।



कुछ समय बाद दुष्ट राजकुमार राजा बन गया। तपस्वी ने सोचा कि चलकर राजकुमार को बधाई दी जाये। तपस्वी कुछ फूल लेकर राजा को बधाई देने के लिए चल पड़ा।

राजा फूलों से सजे हाथी पर बैठकर अपने शहर में घूम रहा था। उसने तपस्वी को अपनी ओर आते हुए देखा, तो उसने अपने सैनिकों से कहा - "इस तपस्वी को पकड़कर मारते हुए, सारे शहर में घुमाओं।" सैनिकों ने तपस्वी को पकड़कर मारना शुरू कर दिया। तपस्वी सबसे पूछने लगा कि मेरा कसूर तो बताओ? तभी एक बुद्धिमान आदमी ने तपस्वी से सारी बातें बताने के लिए आग्रह किया। तपस्वी ने नदी से राजकुमार को बाहर निकालने से लेकर अन्त तक की सारी बातें बताईं।

जिसने भी यह सारी बातें सुनी, वही बोला - "जो भलाई के बदले इस तपस्वी के साथ इतना अत्याचार कर रहा है, वह हमारी क्या भलाई करेगा।"

सारे शहर में यह बात फैल गई। सभी अपने-अपने घरों से निकल आये। सभी गुस्से में थे। उन्होंने राजा पर जूते, पत्थर, तीर इत्यादि से हमला कर दिया और राजा को मार डाला। उसका मुकुट भी उतार लिया।

सभी ने तय किया कि अब वह तपस्वी को ही राजा बनायेंगे। इस प्रकार वह तपस्वी राजा बन गया।

तपस्वी, दुष्ट राजकुमार के पास आने के पहले सभी को परखने के लिये सांप, तोता और चूहे के पास भी गया था। सांप ने तपस्वी को सोने के सौ सिक्के दिये थे। तोते ने तपस्वी को बहुत सारे चावल दिये थे। चूहे ने तपस्वी का स्वागत करते हुए, उन्हें बहुत सारी वस्तुएं भेंट की थीं।

राजा बनने के बाद तपस्वी ने तीनों को बुलाया। सांप के लिये उसने सोने का एक बहुत बड़ा घर बनवाया। चूहे के लिये एक बहुत सुन्दर बिल बनवाया और तोते के लिये सोने का एक बहुत सुंदर पिंजरा अपने महल में बनवाया ताकि तीनों सुरक्षित एवं आराम से रह सकें।

इस तरह तपस्वी राजा बनने के बाद अपनी प्रजा के सुख-दुख का ध्यान रखते हुए महल में रहने लगे।

शिक्षा: जो हमारे लिये अच्छा करता है, उसका एहसान हमें नहीं भूलना चाहिये।

बौना धनुर्धारी

एक शहर में एक बौना युवक विद्या ग्रहण करके हर विद्या में निपुण हो गया । सभी उसे धनुग्रह पंडित के नाम से पुकारने लगे ।

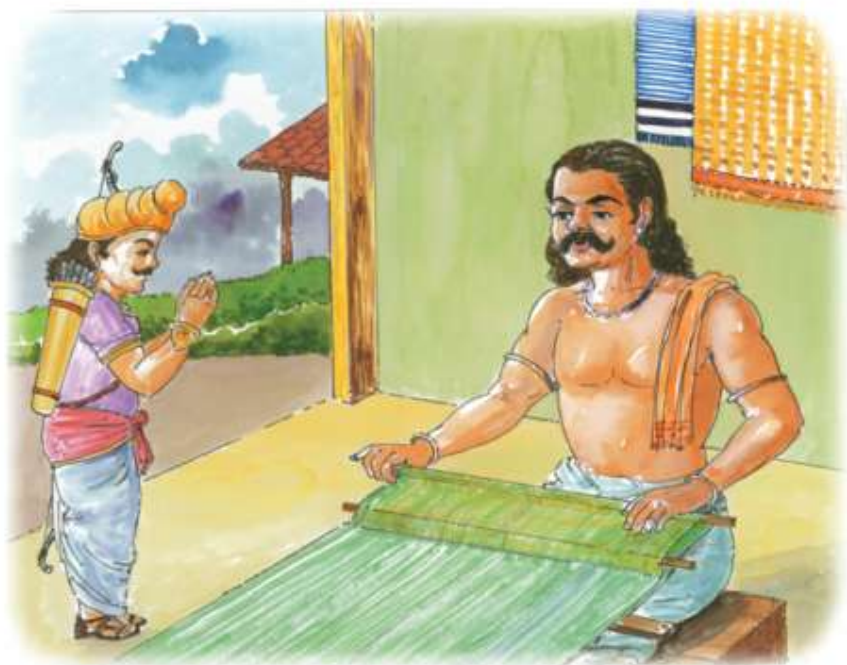
वह राजा के दरबार में जाकर अपनी निपुणता दिखाना चाहता था । परन्तु कद छोटा होने के कारण उसे यह शक रहता था कि शायद वह राजा को प्रभावित न कर पाये । उसने सोचा कि किसी हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति को सामने रखकर वह अपनी निपुणता दिखा सकता है ।

बहुत ढूंढने के बाद ,उसे एक हृष्ट-पुष्ट युवक मिला । उस युवक ने बताया कि मेरा नाम भीमसेना है और मैं कपड़े बुनने का काम करता हूं ।

बौने ने उसे अपने विषय में बताया और कहा-“पूरे जम्बूद्वीप में मेरे जैसा धनुर्धारी दूसरा नहीं है। मैं राजा के सामने जाने से संकोच करता हूं ,क्योंकि मैं बौना हूं । मैं चाहता हूं ,तुम अपना यह काम छोड़ कर मेरे साथ राजा के पास चलो । राजा तुम्हारे डील-डौल से प्रभावित होगा । राजा तूम्हें जो काम बताएगा उसे मैं पूरा करूंगा । तुम राजा के सामने रहना ,मैं पीछे से सारा काम करूंगा । इस प्रकार हम धन कमाकर अपना जीवन खुशी से बिता सकेंगे ।”

भीमसेन , बौने की बात समझ गया और राजा के पास जाने के लिये तैयार हो गया । दोनों राजा के दरबार में पहुंचे और राजा को झुक कर प्रणाम किया । राजा ने पूछा -“आप लोग कौन हो और यहां किसलिये आये हो?”

भीमसेन ने कहा –“मैं एक धनुर्धारी हूं और मेरे जैसा कोई भी धनुर्धारी इस पूरे शहर में नहीं है।”



राजा ने पूछा-“ तुम अपने काम के बदले में हमसे क्या लोगे ?”
भीमसेन ने कहा- “एक हजार सिक्के एक दिन के।” राजा ने पूछा-“यह दूसरा यूवक कौन है ?” भीमसेन बोला-“महाराज, यह मेरा नौकर है ।” राजा ने कहा-“ठीक है। तुम दोनों इस महल में काम कर सकते हो ।” राजा जो भी काम भीमसेन को देता , धनुग्रह पंडित उस कार्य को आसानी से कर देता और भीमसेन राजा से शाबासी पाता ।



एक बार एक चीता जंगल से भटकता हुआ शहर में घुस गया और सबको डराने लगा। डरे हुए लोग राजा के पास पहुंचे और राजा को चीते के बारे में बताने लगे। राजा ने उनकी बात सुनकर भीमसेन को बुलाया और पूछा-“क्या तुम चीते को पकड़ सकते हो?”

भीमसेन बोला-“अगर मैं यह छोटा काम भी पूरा न कर सकूँ तो मेरे धनुर्धारी होने का क्या फायदा?”

यह कहकर भीमसेन घर आया और धनुग्रह पंडित को चीते के बारे में बताया और पूछा, “क्या तुम चीते को पकड़ने चलोगे?”



धनुग्रह पंडित बोला –“मैं नहीं जाऊंगा । मैं तूम्हें एक उपाय बताऊंगा, तुम वैसा ही करना। उपाय यह है कि तुम अकेले जंगल में नहीं जाना । शहर के कुछ लोगों को इकट्ठा कर एक समूह बना ,हथियार लेकर जंगल में जाना ।जब तुम्हें चीता दिखाई दे ,तुम भाग कर झाड़ियों की ओर जाना और जमीन पर लेट जाना । लोग चीते को देखते ही उस पर टूट पड़ेंगे और चीते को मार देंगे । इसके बाद तुम लोगों के पास जाना और आश्चर्य से कहना ,अरे! तुमने इसे मार डाला! मैं तो इसकी नाक में नकेल डालकर राजा के पास जिंदा ले जाना चाहता था । इसको जिंदा देखकर, राजा खुश होते। अब मैं राजा को क्या जवाब दूंगा ?”

भीमसेन ने ऐसा ही किया । सभी लोग डर गये। उन्होंने सोचा , शायद राजा ऐसा ही चाहते थे । उन्होंने कहा कृपया राजा को यह मत बताना कि हमने चीते को मारा है । इस तरह धनुग्रह पंडित का उपाय काम कर गया । भीमसेन मरे हुए चीते को लेकर राजा के पास गया ।राजा उसे देखकर बहुत खुश हुआ । उन्होंने भीमसेन को बहुत सारा ईनाम दिया ।

इस प्रकार भीमसेन , राजा के सभी काम धनुग्रह पंडित की सलाह से पूरा करता रहा और धन प्राप्त करता रहा । अब भीमसेन एक अमीर आदमी बन गया और उसमें घमंड भी आ गया । अब उसने धनुग्रह पंडित का भी अपमान करना शुरू कर दिया । वह धनुग्रह पंडित से कहता , मुझे अब तुम्हारी जरूरत नहीं है । मैं खुद ही सारे काम कर सकता हूं ।

कुछ दिनों बाद पड़ोसी राजा ने हमला कर दिया । राजा ने सेनापति को बुलाया और सेना तैयार कर भीमसेन को साथ लड़ाई के मैदान में चला गया ।

अब धनुग्रह पंडित को भीमसेन की चिंता होने लगी कि उसका क्या होगा ? धनुग्रह पंडित भी भीमसेन के पीछे हाथी पर बैठ गया । सेना का बिगुल बजा ,दोनों सेनाएं युद्ध के लिये तैयार हो गईं ।

भीमसेन बहुत डरा हुआ था । उसका डर देख धनुग्रह पंडित बोला –“डरो नहीं। मैं यहीं हूं। मैं तुम्हें सुरक्षित घर पहुंचा दूंगा। ” भीमसेन को घर पहुंचाकर धनुग्रह पंडित फिर लड़ाई के मैदान में पहुंच गया। वहां उसने अपनी धनुर्विद्या का बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और युद्ध जीत कर राजमहल में लौट आया। राजा ने खुश होकर उसका बहुत सम्मान किया और उसे बहुत धन देकर जम्बुदीप का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी घोषित किया । धनुग्रह पंडित ,खुशी-खुशी भीमसेन के घर गया । उसको भी धन दिया तथा खुद दरबार में लौट आया । अब वह राजा के साथ बहुत सम्मान से खुशी-खुशी रहने लगा ।

शिक्षा: झूठा घमंड कभी नहीं करना चाहिये ।

मोतियों का हार

एक बार एक रानी स्नान करने के लिए बगीचे में स्थित तालाब में जाने लगी । रानी ने अपना मोतियों का हार उतारा और अपनी दासी को सम्भाल कर रखने के लिए दे दिया । उस तालाब के पास एक पेड़ था, जिस पर कुछ बंदर रहते थे । एक बंदरिया यह सब बहुत ध्यान से देख रही थी । जब बंदरिया ने देखा कि रानी स्नान करने के लिये चली गई और दासी बैठी-बैठी सो गई, तब उसने चुपके से हार को उठाकर पेड़ की खोल में छिपा दिया ।

जब दासी की नींद खुली, तो उसने देखा कि हार वहां नहीं है । वह डर गई और जोर-जोर से चिल्लाने लगी - " हार खो गया, हार खो गया" ।

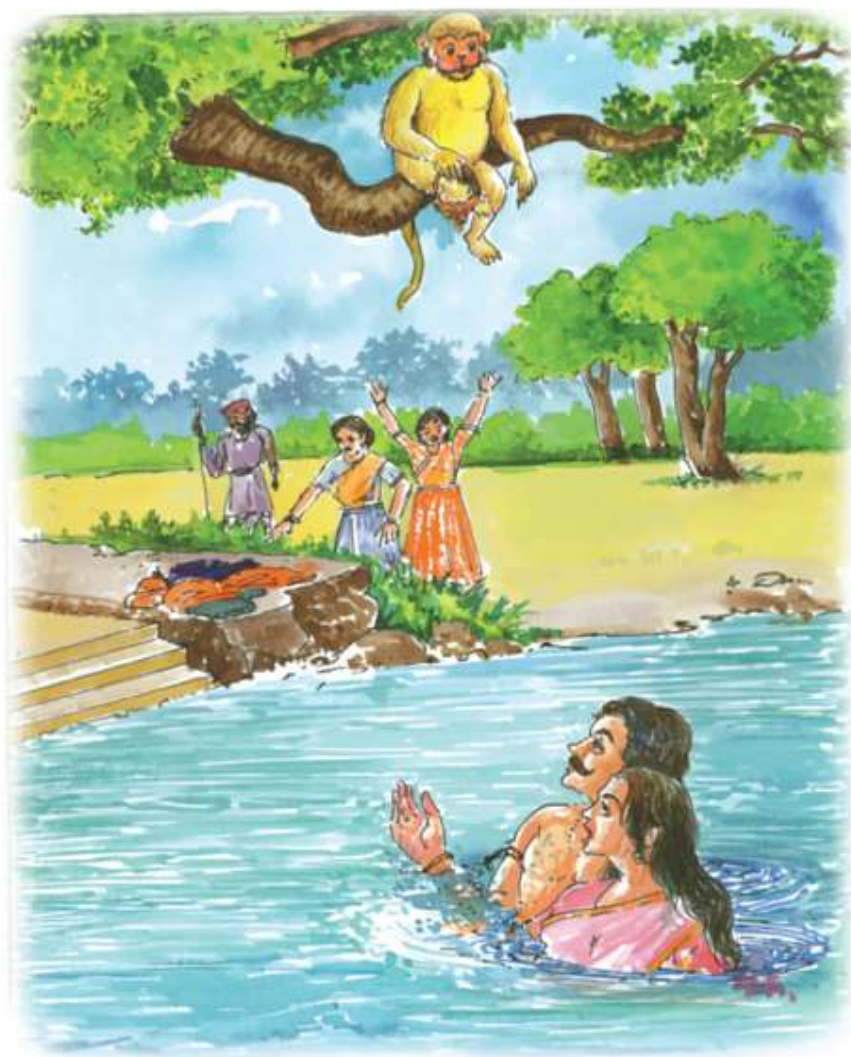
सभी सैनिक वहां इकट्ठे हो गये और अन्य दासियों के साथ मिलकर हार ढूंढने लगे पर हार नहीं मिला ।

राजा ने सभी सिपाहियों को आज्ञा दी- "शीघ्र ही चोर का पता लगाया जाए ।"

सिपाही हार और चोर को ढूंढने के लिये आस-पास के सभी गांवों हर व्यक्ति से हार के बारे में पूछने लगे । इसी भाग-दौड़ में सिपाहियों ने एक मासूम आदमी को चोर समझ पकड़ लिया और उसे राजा के पास महल में ले गये ।

वहां पहुंच कर उस मासूम आदमी ने सोचा कि अगर मैं हां कर दूं तो यह शायद मुझे छोड़ देंगे, नहीं तो यह मुझे मार देंगे । राजा ने पूछा- "हार तुमने चुराया है?"

मासूम आदमी बोला- "जी महाराज । " राजा ने पूछा- "अब हार कहां है?" मार से बचने के लिये मासूम आदमी ने झूठ बोला कि उसने हार व्यापारी को दे दिया है । राजा ने व्यापारी को दरबार में बुलाया और पूछा - " तुमने इस आदमी से हार लिया ? " व्यापारी ने भी मार से बचने के लिये बोल दिया , " जी महाराज । " राजा ने पूछा - " हार कहां है ? " व्यापारी ने कहा - " मैंने पुरोहित को दे दिया । " राजा ने पुरोहित को बुलवाया । उसने भी डर के कारण कहा - " मैंने एक गायक को दे दिया है । " गायको को दरबार में बुलाया और पूछा तो उसने कहा - " मैंने हार नर्तकी को दे दिया है । " नर्तकी को बुलाया गया तो नर्तकी ने राजा से कहा - " मुझे किसी ने हार नहीं दिया । " इसी पूछताछ में शाम हो गई , तो राजा ने मंत्री को बुलाया और चारों को उसके हवाले करते हुए कहा कि पता लगाओ असली चोर कौन है । यह कहकर वह महल में चला गया ।



बुद्धिमान मंत्री ने सोचा कि हार तो बगीचे में खोया है और वहां इतना पहरा था कि कोई न तो अन्दर जा सकता था , न ही बाहर आ सकता था । मुझे लगता है , इनमें से कोई चोर नहीं है । यह लोग केवल मार के डर के कारण ऐसा कह रहे हैं । उसने सोचा बगीचे में बहुत सारे बन्दर हैं , हो सकता है किसी बन्दर ने हार ले लिया हो ।

अगले दिन मंत्री ने लाल रंग कि नकली मोतियों की बहुत सारी मालायें बगीचे में इधर-उधर बिखेर दीं और छिप कर बैठ गया । बन्दरों ने मालायें देखीं , तो बे एक - एक कर मालायें अपने गले में पहनने लगे । पर बन्दरिया अपनी जगह से नहीं हिली । वह तो हार की रखवाली कर रही थी ।



जब सबी बन्दरों को उसने हार पहने देखा तो उसे जलन होने लगी । उसने पेड़ की खोल में से मोतियों का हार निकाला और गले में पहनकर बहुत घमंड से सबको अपना हार दिखाने लगी ।

हार देखकर मंत्री ने बन्दरिया को पकड़वा कर हार ले लिया । मंत्री हार लेकर राजा के पास पहुंचा और उसे सारी घटना बताई ।

राजा ने हार ले लिया और बुद्धिमान मंत्री की प्रशंसा करते हुए कहा- "अगर तुम्हारे जैसा बुद्धिमान मंत्री मिल जाए तो सभी समस्याओं का समाधान मिलता रहेगा ।"

शिक्षा: झूठा घमंड व्यक्ति को नष्ट कर देता है ।

नाम का अर्थ

तक्षशिला के गुरुकुल में एक बहुत ही ज्ञानी गुरु थे। उनके बहुत सारे शिष्य थे। उन शिष्यों में से एक शिष्य का नाम 'पापक' था। जब भी उसे पापक नाम से पुकारा जाता, उसे बहुत बुरा लगता था। उसने सोचा, मेरा नाम बहुत बुरा है, मैं कोई दूसरा नाम रख लेता हूं। " वह अपने गुरुजी के पास जाकर बोला-"गुरुजी, मेरा नाम बहुत ही बुरा है। आप मेरा नाम बदल दें। "

गुरुजी बोले-"नाम तो केवल सम्बोधन है। जिसके द्वारा हमें बुलाया जाता है। नाम के अर्थ से कुछ भी नहीं होता। "

पापक फिर बोला-"गुरुजी! आप मुझे कोई दूसरा नाम दे ही दें। "

गुरुजी बोले-"बहुत अच्छा बेटा। तुम एक काम करो, शहर जाकर अपने लिये एक नया नाम चुन लाओ। उसके बाद मैं तुम्हारा नाम बदल दूंगा। "

पापक गुरुजी की आज्ञा का पालन करता हुआ शहर में अपना अच्छा नाम ढूँढने के लिये चल दिया।

पापक ने रास्ते में कुछ लोगों को एक शव ले जाते हुए देखा। उसने लोगों से पूछा-"इनका नाम क्या था?"

उस आदमी ने कहा-"इनका नाम जीविका था, जिसका मतलब है 'जीवित व्यक्ति'। "



पापक सोचने लगा, इसका नाम 'जीविका' था, फिर भी मर गया? जीविका भी आजीविका हो गया? इसलिये कहते हैं, नाम तो केवल पुकारने के लिये है। मैं ही मूर्ख हूं जो अपने नाम के बारे में सोच रहा हूं। "

पापक, आगे बढ़ा तो उसने देखा कि एक मालिक अपनी नौकरानी को कोड़े से मार रहा है। पापक ने उस आदमी से पूछा-"तुम इस गरीब लड़की को क्यों मार रहे हो?"

आदमी बोला-"मैंने इसे धन देकर इसके पिता से खरीदा था। यह काम करके मुझे प्रतिदिन कमाकर देती है। परंतु आज इसने कुछ भी कमाकर नहीं दिया। "

पापक ने पूछा-"इसका नाम क्या है?"

आदमी बोला- "इसका नाम धनपाली है। "

पापक ने सोचा- "इसका नाम धनपाली है फिर भी यह लड़की गरीब है। इसलिए नाम में क्या है? मैं ही मूर्ख हूं जो इस बारे में सोचता हूं।"

वह आगे बढ़ा, तो उसे एक आदमी मिला, जो रास्ता भूल गया था। पापक ने उससे पूछा- "क्या हुआ?"

वह आदमी बोला- "मैं रास्ता भूल गया हूं।"

पापक ने पूछा- "तुम्हारा नाम क्या है?"

वह आदमी बोला- "मेरा नाम पंथका है।"

पापक ने सोचा- "इसका नाम पंथका है फिर भी यह रास्ता भूल है। इसलिए नाम में क्या है? नाम तो केवल सम्बोधन मात्र है। मैं ही मूर्ख हूं जो इस बारे में सोचता हूं।"

पापक इसी सोच में भारी मन लिये हुए, अपने गुरुजी के पास वापिस लौट आया।

गुरुजी ने पापक से पूछ- "बेटा क्या तुम्हें अपना मनपसंद नाम मिल गया?"

पापक ने कहा- "गुरुजी! जीविका भी आजीविका के समान मर जाता है। धनपाली भी अधनपालिका के समान गरीब होती है और पंथका भी अपंथका के समान रास्ता भूल जाता है। तब फिर, इस नाम से क्या? मैं क्यों अपने नाम को बुरा समझता हूं? इसलिये मेरा नाम जो भी है वही अच्छा है।"

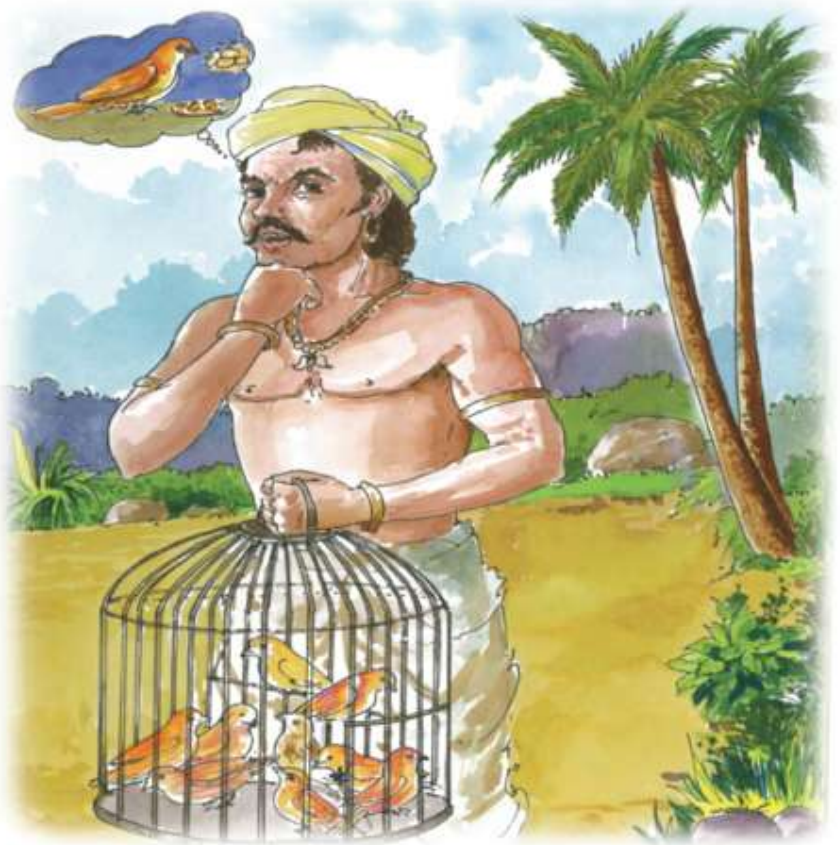
शिक्षा: नाम सिर्फ एक सम्बोधन है। नाम के अर्थ से कुछ नहीं होता।

बुद्धिमान बटेर

एक जंगल में बहुत सारे बटेर रहते थे। उनका मुखिया बहुत बुद्धिमान था। जिसके कारण सारे बटेर बहुत खुश थे।

एक बार एक शिकारी को जंगल में रहने वाले इन बटेरों के बारे में पता चला, तो वह जंगल में गया। उसने बटेरों की बोली में ही एक आवाज लगाई। जिसे सुनकर बहुत सारे बटेर इकट्ठे हो गये। उसने जाल डाल कर उनको पकड़ लिया और घर लाकर एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया।

शिकारी उन्हें बहुत दाना-पानी देता था, जिसे खाकर बटेर बहुत मोटे-ताजे हो गये। लेकिन बटेरों के मुखिया ने न तो दाना खाया, न ही पानी पिया। वह भूखा-प्यासा रहकर पतला और कमजोर रहना चाहता था, ताकि जब भी शिकारी बटेरों को बेचने जाए तो उसे कोई भी नहीं खरीदे।



एक दिन शिकारी सारे बटेरों को लेकर बाजार में बेचने गया। सारे बटेर बिक गये पर मुखिया को किसी ने नहीं खरीदा, क्योंकि वह बहुत कमजोर दिख रहा था।

शाम हो गई तो शिकारी उसको लेकर घर वापिस आ गया। वह उसको पिंजरे में बन्द करने लगा तो उसका ध्यान जरा सा हट गया, जिससे वह अचानक उसके हाथों से निकलकर उड़ गया। शिकारी उसे देखता ही रह गया।

मुखिया बटेर जंगल में अपने साथियों के पास पहुंच गया। उसे देखते ही सब बटेर बहुत हैरान और खुश होकर भगवान को धन्यवाद देने लगे। मुखिया ने उन्हें सारी आप-बीती सुनाई।

उसने सब को समझाया कि जो अपने दुखों से बाहर निकलने का उपाय नहीं सोच सकता, वह कभी दुखों से छुटकारा नहीं पा सकता। इसलिये बुद्धि से सोचने पर कोई हल निकल ही आता है।

शिक्षा : विपरीत परिस्थिति में हमें आत्म-संयम नहीं खोना चाहिये । धैर्य, दिमाग और आत्म - विश्वास से कोई न कोई रास्ता अवश्य मिलता है ।

मूर्ख शिष्य

किसी गुरुकुल में बहुत सारे शिष्य पढ़ते थे। उनमें से एक शिष्य ऐसा था जो न तो पढ़ पाता, न कुछ याद कर पाता और न ही कुछ समझ पाता था। लेकिन वह बहुत आज्ञाकारी था और गुरुजी की बहुत सेवा करता था। उसकी इसी बात से खुश होकर गुरुजी उसे कुछ सीखाना चाहते थे।

एक दिन शाम को गुरुजी आराम कर रहे थे और वही शिष्य आकर उनके पैर दबाने लगा। गुरुजी को नींद आने लगी। सोने से पहले वह शिष्य से बोले- “मेरी चारपाई का ‘पाया’ कमजोर है, इसके नीचे कुछ लगा जाना ताकि चारपाई गिरे नहीं।” इसके बाद गुरुजी गहरी नींद में सो गये। मूर्ख शिष्य ने आस-पास देखा, उसे कोई भी चीज दिखाई नहीं दी, जिसे वह चारपाई के नीचे रख सके। चारपाई गिर न जाये इसी डर से उसने ‘पाये’ को अपनी जांघ पर रख लिया और सारी रात ऐसे ही बैठा रहा। सुबह जब गुरुजी की आंख खुली तो यह सब देखकर वे बहुत आश्चर्य-चकित हुए। उन्हें शिष्य पर बहुत दया आई।

गुरुजी ने सोचा- “इस शिष्य ने तन-मन से मेरी सेवा की है फिर भी मैं इसे अन्य शिष्यों की तरह पढ़ा-लिखा नहीं पाया। अब मैं इसे कुछ आसान उदाहरणों से शिक्षा दूंगा।”

गुरुजी ने उसे जंगल में लकड़ियां तथा सुखी पत्तियां लाने के लिए भेजा और कहा कि जंगल में जाकर देखो-वहां क्या-क्या है, और फिर आकर मुझे बताओ कि तुमने क्या देखा और समझा? गुरुजी की आज्ञा का पालन करने वह जंगल में गया। वहां उसने एक

सांप देखा। जब वह वापिस लौटा, तो गुरुजी ने उससे पूछा - “बेटा, तुमने जंगल में क्या देखा?” शिष्य ने उत्तर दिया- “गुरुजी, आज मैंने एक सांप देखा।”



गुरुजी ने पूछा- “वह कैसा था?”

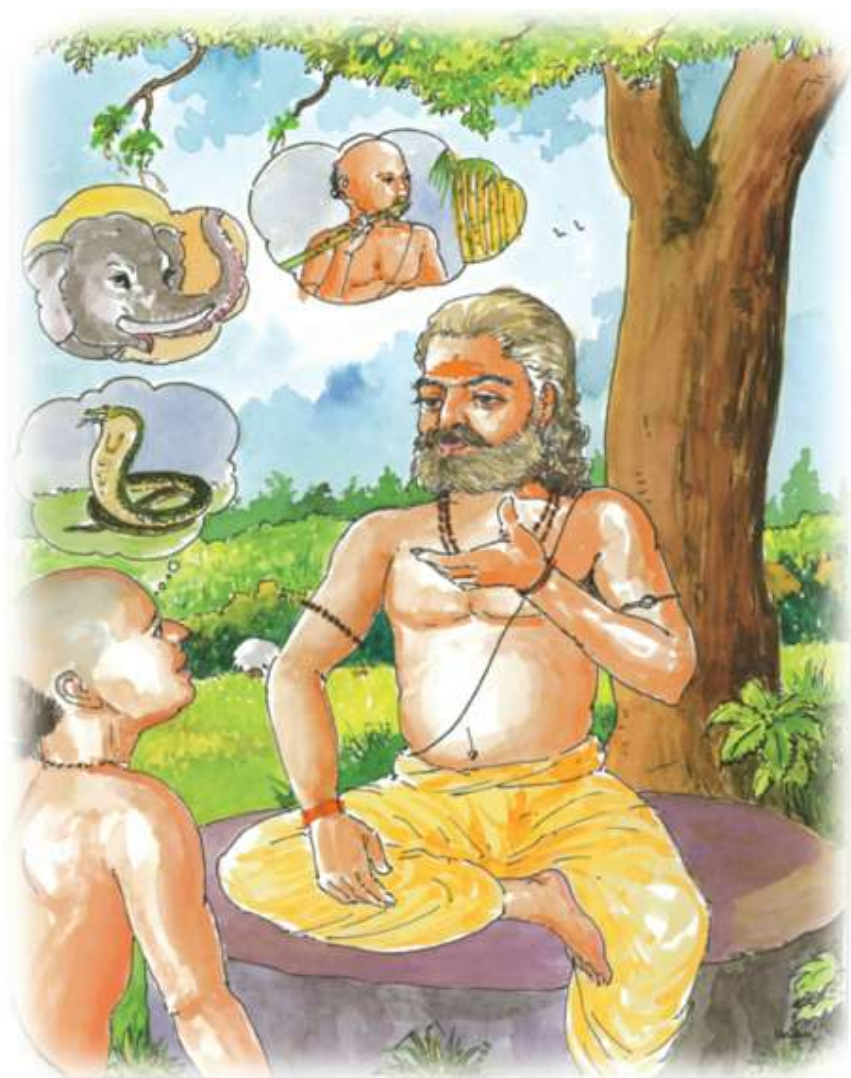
शिष्य बोला- “हल के फल (हल का निचला लोहे का नुकीला भाग जिससे भूमि जोती जाती है) के जैसा।”

गुरुजी कुछ सोचकर बोले- “बहुत अच्छा बेटे। तुमने सांप को ‘हल के फल’ के समान समझा।” उन्होंने उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिये उसे शाबाशी दे कर वहां से भेज दिया।

दूसरे दिन फिर गुरुजी ने उसे जंगल में भेजा। वहां जाकर उसने हाथी देखा और लौटकर आने के बाद उसने गुरुजी को बताया कि उसने आज हाथी देखा।

गुरुजी ने पूछा- “हाथी कैसा था?”

शिष्य बोला- “हल के फल जैसा”।



शिष्य का उत्तर सुनकर गुरुजी सोच में पड़ गये। क्योंकि यह हाथी को भी ‘हल के फल ‘ जैसा कह रहा था। यह सोचकर वह चुप ही रहे।

अगले दिन शिष्य फिर जंगल में गया। वहां उसने गन्ना देखा। उसे चूसा और गुरुकुल लौटने पर गुरुजी को बताया।

गुरुजी ने पूछा- “गन्ना कैसा था?”

शिष्य बोला- “हल के फल जैसा”।

गुरुजी उसे देखते ही रह गये। वह उसकी बात से सहमत नहीं थे इसलिये वह चुप हो गये।

एक दिन मूर्ख शिष्य सभी शिष्यों के साथ दावत में गया। वहां उसने गुड़, दूध व दही देखा और उसे खाया-पिया। गुरुकुल लौट कर उसने गुरुजी को बताया कि आज मैंने दावत में दूध, दही और गुड़ देखा।

गुरुजी ने पूछा- “वह कैसा था?” शिष्य बोला- “हल के फल जैसा”।

उसकी बात सुनकर गुरुजी मूर्ख शिष्य के अंधकार भरे जीवन के बारे में चिन्ता करने लगे। वे सोचने लगे कि इसने सांप की तुलना ‘हल के फल’ से की और हाथी की तुलना ‘हल के फल’ से की। हो सकता है सांप के जहरीले होने के कारण या हाथी के नुकीले बड़े-बड़े दांतों के कारण की हो, परन्तु इसने गन्ने की तुलना भी ‘हल के फल’ से की यह तो असंभव है। और तो और, इसने गुड़, दूध व दही की तुलना भी ‘हल के फल’ से की, यह तो हो ही नहीं सकता। यह शिष्य तो बिल्कुल ही मूर्ख है। मैं इसे न पढ़ा-लिखा सकता हूं और न ही उदाहरणों के द्वारा कुछ समझा सकता हूं।

शिक्षा: आप अज्ञानी व्यक्ति को शिक्षा दे सकते हैं, पर मूर्ख को नहीं।

ढोंगी भेड़िया

किसी जंगल में धार्मिक नाम का एक भेड़िया रहता था । वह अपने नाम अनुसार धार्मिक नहीं बल्कि उसके विपरीत बहुत धूर्त था । उसी जंगल के बहुत सारे चूहे भी रहते थे । उनका मुखिया बहुत मोटा और बुद्धिमान था । वह सभी चूहों का बहुत ध्यान रखता था । इसलिये सभी चूहे उसका सम्मान करते थे और उससे बहुत खुश भी थे ।

भेड़िये ने जब उन चूहों को देखा तो सोचने लगा , " इनसे किस तरह जान - पहचान बढ़ाई जाये । " तभी उसे एक उपया सूझा और वह उनके घर के बाहर आसमान की ओर देखता हुआ मुंह खोल कर एक टांग पर खड़ा हो गया , जैसे कि कोई तपस्वी अपनी तपस्या में खड़ा हो ।

सारे चूहे उसे देखकर बहुत हैरान हुए । चूहों के मुखिया ने उसके पास जाकर पूछा - "आप कौन हैं ? "

भेड़िया बोला - " मेरा नाम धार्मिक है । "

मुखिया ने पूछा - " आप एक टांग पर क्यों खड़े हैं ? "

भेड़िया बोला - " यह पृथ्वी मेरी चार टांगों का बोझ नहीं सह सकती , इसीलिए मैं एक टांग पर खड़ा हूं । "

मुखिया ने पूछा - " आपने अपना मुंह क्यों खोल रखा है ? "

भेड़िया बोला - " मैं केवल हवा खाता हूं । "



मुखिया ने पूछा - " आपका मुंह आसमान की ओर क्यों है ?"

भेड़िया ने बोला - "मैं सूर्यदेव को प्रणाम कर रहा हूं ।"

मुखिया ने सोचा , हम सब भी इनकी तपस्या में अपनी सेवा दे सकते हैं । उसने सब चूहों को कहा कि हम भी इस तपस्वी की सेवा करेंगे और भगवान की कृपा प्राप्त करेंगे ।

भेड़िया यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ । वह यही चाहता था । चूहे सारे दिन भेड़िये की सेवा करते और शाम होते ही लाईन बनाकर

अपने बिल में घुस जाते । इस प्रकार जब चूहे अपने बिल में जाते तब भेड़िया आखिरी वाले चूहे को पकड़कर खा जाता था । इस प्रकार चूहों की संख्या कम होने लगी । जिस बिल में चूहे पूरे नहीं आते थे , वह अब खाली - खाली लगने लगा । सभी सोचने लगे , यह क्या हो गया , बिल खाली - खाली क्यों लग रहा है ? मुखिया को भेड़िये पर शक हो गया । अगले दिन शाम को जब सारे चूहे तपस्वी रूपी भेड़िये की सेवा कर अपने बिल में जाने लगे तब मुखिया लाईन में सबसे आखिरी नम्बर पर लग गया । जैसे ही भेड़िये ने झपटा मारा , मुखिया चुहा उछलकर दूर हो गया ।

मुखिया , भेड़िये का अपमान करते हुए बोला - " ओ ढोंगी भेड़िये ! तुम तपस्वी नहीं हो , बल्कि तुम तो तपस्या के नाम पर धोखा देकर अपने लिये पापों को बढ़ा रहे हो । ऐसे पापी , ढोंगी धार्मिक नहीं कहलाते , बल्कि दुष्ट कहलाते हैं । "

शिक्षा : अपने स्वार्थ के लिये किसी को ,
कोई भी दुःख नहीं देना चाहिये ।

विश्वासघाती मित्र

एक समय दो गहरे मित्र थे। उनमें से एक मित्र राजगृह का सबसे अमीर आदमी था और दूसरा वाराणसी का था। उन दोनों के पास बहुत सारी सम्पत्ति थी। दोनों राज्यों के लोग उनकी मित्रता की सराहना करते थे।

एक बार वाराणसी वाले अमीर को व्यापार में बहुत घाटा हुआ जिस कारण उस पर कर्ज हो गया। उसके शहर में किसी ने भी उसकी सहायता नहीं की, इसीलिये वह अपनी पत्नी को लेकर सहायता के लिए अपने मित्र के पास राजगृह गया।

उसके मित्र ने उसका दिल से स्वागत किया और उसके आने का कारण पूछा। मित्र ने अपने व्यापार में घाटे से लेकर, अपनी सारी सम्पत्ति खो देने की तथा कर्जों में होने की सारी बात बताई और कहा— “ मैं इस बड़ी परेशानी में तुमसे सहायता की उम्मीद लेकर आया हूँ। ”

राजगृह वाले मित्र ने बहुत प्रेम से कहा— “ मित्र ! तुम चिन्ता नहीं करो ” और उसने अपनी आधी सम्पत्ति, आधे नौकर और बहुत सारी वस्तुएं देकर, खुशी-खुशी विदा किया।

समय बदला, अब राजगृह वाले अमीर का बुरा वक्त आया। उसके व्यापार में भी घाटा हो गया। उसका भी सब कुछ नष्ट हो गया और वह भी कर्जों में आ गया। तब उसे भी अपने वाराणसी वाले मित्र की याद आई। उसने सोचा क्योंकि मैंने बुरे वक्त में

अपने मित्र की सहायता की थी तब वह भी मेरी सहायता जरूर करेगा। मुझे भी उसके पास जाना चाहिये।



वह अपनी पत्नी के साथ वाराणसी पहुंचा। उसने अपनी पत्नी को एक धर्मशाला में ठहराया और कहा—“तुम यहां ठहरो। मैं अपने मित्र के घर जाता हूं और वहां से घोड़ा-गाड़ी लेकर आऊंगा। तब तुम्हें बहुत शान से मित्र के घर ले जाऊंगा। ”

जब वह अपने मित्र के घर पहुंचा उसने अपने आने का संदेश उस तक पहुंचाया। वाराणसी वाले मित्र ने राजगृह वाले मित्र के आने की कोई खुशी नहीं मनाई, न ही उसका स्वागत किया और उससे पूछा—“ तुम यहां क्यों आये हो ?”

राजगृह वाले मित्र ने उसे अपनी सारी आप-बीती बताई। वाराणसी वाला मित्र बोला—“ मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। तुम एक कटोरा अनाज ले जाओ। ” उसने अपने नौकर को बुलाया तथा आज्ञा दी की इसे एक कटोरा अनाज दे दो। उसी दिन वाराणसी वाले मित्र के यहां एक हजार बैलगाड़ी भर कर बढ़िया चावल आया था। उसमें से उसे कुछ भी नहीं दिया।

राजगृह वाला मित्र सोचने लगा कि इतना सारा अनाज होने के बाद भी इसने मुझे केवल एक कटोरा ही अनाज दिया। इसने तो मेरा अनादर किया है। मेरी भावनाओं को धोखा दिया है। यह विश्वासघाती है। उसने अनाज को कपड़े में बांधा और अपनी पत्नी के पास पहुंचा। पत्नी ने पूछा—“ पतिदेव ! आपके मित्र ने आपकी क्या सहायता की ?” वह बोला—“ प्रिय! उस अमीर आदमी ने तो मेरी सहायता करते हुए, मुझे केवल एक कटोरा अनाज ही दिया है।” पत्नी यह देखकर जोर-जोर से रोने लगी और बोली—“ वाह! आपके मित्र ने आपका मजाक उड़ाया है। आपने उसे अपनी आधी-सम्पत्ति तथा नौकर दिये और उसने आपको केवल एक कटोरा अनाज ही दिया है।”

पत्नी को रोता देख उसने उसे समझाया—“ प्रिय! रोओ नहीं! मैं जानता हूं कि अपने मित्र को समझने में मैंने बहुत भूल की पर अब मुझे अपने मित्र के खोने का कोई दुःख नहीं है। तुम चिंता मत करो। भगवान सब ठीक करेंगे।” परन्तु पत्नी रोती ही रही। तभी एक आदमी वहां से निकला। वह आदमी उनका नौकर था जिसे उन्होंने वाराणसी वाले अमीर आदमी के साथ भेजा था।

उसने प्रणाम करके पूछा—“ स्वामी! आपकी यह हालत कैसे हो गई?” राजगृह वाले अमीर ने उसे सारी बात बताई। वह नौकर उनकी बातों को सुनकर बहुत दुखी हुआ और बड़े आदर से अपने पुराने मालिक और मालकिन को अपने घर ले गया। वहां उनको ठहराया उनके नहाने इत्यादि का प्रबंध कर बहुत बढ़िया भोजन कराया। फिर अपने सारे साथियों को इकट्ठा कर अपने मालिक-मालकिन के साथ राजदरबार गया।

वहां राजा को राजगृह वाले अमीर तथा वाराणसी वाले अमीर की सारी बात बताई। राजा ने तुरंत वाराणसी वाले अमीर को बुलवाया और आदेश दिया कि वह राजगृह वाले अमीर को सारी

सम्पत्ति ब्याज सहित लौटाये। वाराणसी वाले अमीर ने राजा के आदेश का पालन किया। इस प्रकार सम्पत्ति ले राजगृह का अमीर राजगृह लौट गया।

शिक्षा: सच्चा मित्र वही है जो बुरे समय में भी साथ दे।



लालची औरत

वाराणसी के एक विद्वान ब्राह्मण के घर में तीन कन्याओं का जन्म हुआ। उनके नाम नन्दा, नन्दावती एवं नन्दासुंदरी थे। वे अभी पूरी तरह जवान भी नहीं हो पाई थीं और अपने परिवार के साथ बहुत अच्छा जीवन बिता रही थीं। अचानक उनके पिता की मृत्यु हो गई। बाद में ब्राह्मण का दूसरा जन्म हंस के रूप में हुआ।

जब हंस बड़ा हुआ तब उसने देखा कि उसके पंख, दूसरे हंसों के समान नहीं हैं। सभी हंसों के पंख सफेद थे पर उसके पंख सोने के थे। इस बात पर उसे बहुत खुशी हुई कि उसके पंख सोने के हैं। वह सोचने लगा कि पिछले जन्म में वह क्या था? कहाँ था? उसे याद आया कि वाराणसी शहर का एक ब्राह्मण था और वह, वहाँ अपने परिवार के साथ बहुत खुश था। यह जानकर उसे अपनी परिवार कि बहुत चिंता हुई। वह सोचने लगा कि मेरे बाद मेरी पत्नी तथा बेटियाँ किस प्रकार रह रही होंगी? उसने और ध्यान से पिछले जन्म के विषय में देखा, तो उसे दिखा कि उसकी पत्नी एवं बेटियाँ दूसरे के घर में जाकर काम कर रही हैं। यह देखकर वह बहुत दुखी हुआ। वह सोचने लगा, मैं किस प्रकार उसकी सहायता करूँ? उसके दिमाग में एक बात आई कि मेरे पंख सोने के हैं। अगर मैं इन्हें एक पंख प्रतिदिन दे दूँ, तो इन्हें दूसरों के घर जाकर काम नहीं करना पड़ेगा और इनका जीवन आराम से कट जायेगा। यह सोचकर वह उड़ कर वाराणसी पहुँचा और घर के छज्जे पर जाकर बैठ गया।



ब्राह्मण कि पत्नी और बेटियों ने उसे देखा और आश्चर्य-चकित हो उसने पूछा-"तुम कहां से आये हो?"

हंस ने उत्तर दिया-"मैं तुम्हारा पिता हूं, तुमसे मिलने के लिये आया हूं । मुझे तुम्हारे बारे में सब पता है । मैं नहीं चाहता, तुम दूसरों के घर में काम करो । मेरे पंख सोने के हैं । मैं तुम्हें अपना पंख दूंगा जिसे बेचकर तुम धन प्राप्त कर सकोगे और आराम से अपना जीवन व्यतीत कर पाओगे । "

यह कहकर हंस ने अपना एक पंख गिरा दिया । इस प्रकार वह प्रतिदिन ऐसा करने लगा । अब ब्राह्मण का परिवार सुख से रहने लगा और वह बहुत अमीर हो गये ।

ब्राह्मण कि पत्नी के मन में लालच आ गया । उसने अपनी तीनों लड़कियों को बुलाया और कहा-"जानवर के दिमाग का कुछ पता नहीं होता । " अभी तो वह अपने सोने के पंख देकर हमारी सहायता कर रहा है, हो सकता है वह कल आये ही नहीं । क्यों न हम आज ही उसके सारे पंख ले लें?"

लड़कियां अपनी मां से सहमत नहीं थीं, पर मां ने अपनी बेटियों की बात नहीं सुनी। जब हंस आया तो उसने दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया और उसके सारे पंख नोच डाले। पंख जमीन पर गिरते ही सफेद हो गये। हंस बिना पंख का हो गया। अब वह उड़ भी नहीं सकता था।

लालची औरत ने उसे एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया और उसके नये पंखों के आने का इन्तजार करने लगी। इस बार हंस के सारे पंख सोने के न होकर साधारण ही थे। लालची औरत ने उसे छोड़ दिया। नये पंखों के आने पर हंस उड़ सकता था। वह उड़कर अपने हंस साथियों के पास पहुंच गया। इस प्रकार लालची औरत ने उसे खो दिया।

इसीलिये कहा जाता है कि जितना मिले उतने में ही संतोष करना चाहिये। अधिक प्राप्त करने का लालच नहीं करना चाहिए लालच करना एक पाप है। लालच बुरे काम करने के लिये हमें उकसाता है।

शिक्षा: इच्छा का कोई अन्त नहीं है। अधिक पाने की
चाह में
हम अपना थोड़ा भी खो देते हैं।

घमंडी सियार

हिमालय के जंगलों में एक शेर रहता था । वह जंगल में घूमता हुआ जोर से दहाड़ता था । उसकी दहाड़ सुनकर सभी जानवर डर से इधर-उधर भागने लगते । उन्हें भागते देख वह उनमें से अपना एक शिकार चुनता और उसे मार कर अपना भूख मिटाता था । एक बार उसने एक जंगली भैंसे का शिकार किया । उसे खाकर वह अपनी गुफा की ओर चल दिया ।

तभी वहां से एक सियार निकला । शेर की निगाह सियार पर पड़ी, तो शेर ने गुराकर पूछा- “जंबुका, क्या बात है ?”

सियार ने कहा- “महाराज! मैं आपकी सेवा करना चाहता हूं ।”

उसकी नम्रता से प्रसन्न होकर शेर बोला- “ऐसी बात है तो मेरे गुफा में चलो ।। अपने खाने के बाद मैं तुम्हें बढ़िया और ताजा मांस खिलाऊंगा । यह कहकर वह सियार को अपनी गुफा में ले आया ।”

इस प्रकार सियार शेर के साथ गुफा में रहने लगा । उसे खाने के लिये ताजा और बढ़िया मांस मिलने लगा, जिसे खाकर सियार मोटा हो गया । एक बार शेर और सियार गुफा में बैठे थे, तो शेर ने कहा -“जंबुका, बाहर जाओ और पहाड़ की चोटी पर चढ़कर चारो तरफ देखो । अपना मनपसंद जानवर ढूंढो तथा मुझे बताओ । मैं उसका ही शिकार करूंगा चाहे वह हाथी, भैंस, घोड़ा, हिरण या कोई भी हो । उसी का मांस मैं तुम्हें खिलाऊंगा ।”



सियार गुफा से बाहर गया पहाड़ की चोटी पर चढ़कर उसने बहुत से जानवरों को देखा और गुफा में लौट आया । उस दिन अपनी पसंद उसने शेर को बताते हुए कहा- “महाराज! आप बहुत शक्तिशाली हैं, आप अपनी शक्ति दिखाइये और मेरी पसंद के जानवर का शिकार करिये । शेर जंगल में गया और जानवर को मारकर ले आया । शेर और सियार ने पेट भर कर स्वादिष्ट मांस खाया और गुफा में आराम करने लगे। इस तरह कई दिनों तक चलता रहा और सियार मोटा होता गया ।

कुछ दिनों बाद सियार को अपने ऊपर घमंड होने लगा वह सोचने लगा, “मेरे पास भी चार टांगें हैं, मेरे अंदर भी शक्ति है । मैं भी हाथी या किसी दूसरे जानवर को मार सकता हूँ । मैं चाहता हूँ कि शेर मुझसे कहे-जंबुका! अपनी शक्ति दिखाओ । तुम बहुत शक्तिशाली हो, जाओ और हाथी को मारकर लावो । मैं भी हाथी को मारकर, शेर को खिलाऊँ । ”

सियार घमंड में भरकर शेर के पास गया और बोला- "महाराज! आप मेरे लिये बहुत दिनों से शिकार कर रहे हैं। आज मैं हाथी

को मारकर, उसका मांस आपको खिलाना चाहता हूं। कृपया, आप मेरी विनती मानकर पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर, चारों तरफ देखकर, एक मोटा हाथी पसंद करें और मुझे बताएं। आप मुझसे कहिये- "जंबुका! तुम बहुत शक्तिशाली हो, अपनी शक्ति दिखाओ। उस हाथी को मारकर उसका मांस मुझे खिलाओ। "

सियार की बात सुनकर शेर गुराया और बोला जंबुका! तुम्हारे अन्दर इतनी शक्ति नहीं है कि तुम हाथी को मार सको। आज तक कोई भी सियार ऐसा नहीं हुआ जो हाथी को मार सके। यह तुम्हारे लिये संभव नहीं है। तुम मुझसे कहो, मैं हाथी को मारकर उसका मांस तुम्हें खिलाता हूं।

शेर की बात सियार ने नहीं मानी और अपनी जिद पर अड़ा रहा। अन्त में शेर उसकी बात को मानकर पहाड़ की चोटी पर चढ़ा, हाथी को पसंद किया और लौटकर गुफा में आकर सियार से बोला-" जंबुका! तुम बहुत शक्तिशाली हो। अपनी शक्ति दिखाओ, उस हाथी को मारकर लाओ और उसका मांस मुझे खिलाओ "।

घमंडी सियार गुफा से बाहर गया और पहाड़ की चोटी पर चढ़कर उसने चारों तरफ देखा। हाथी को देखकर वह जोर से चिल्लाया और उस पर छलांग लगा दी। वह हाथी की पीठ तक नहीं पहुंच पाया और उसके पैरों के पास ही गिर गया। हाथी ने उसे अपनी सूंड से उठा कर फिर जमीन पर पटक दिया और उसके सिर पर पैर रखकर, उसे मार डाला।

शिक्षा: घमंड का अन्त अच्छा नहीं होता है।

उत्तम गुण

वाराणसी में बहुत ही गुणी और शक्तिशाली राजा ब्रह्मदत्त राज्य करता था। सभी उसके गुणों, न्याय एवं नेक कामों के कारण उसका बहुत सम्मान करते थे और उस पर पूरा विश्वास करते थे।

राज के मंत्री भी राजा के समान बहुत नेक और न्यायप्रिय थे। सभी मिलकर किसी भी काम को पूरा कर लिया करते थे। वहां कोई भी आपस में नहीं लड़ता था और न ही कोई चोरी होती थी। इसलिये उनके दरबार में कोई भी शिकायत लेकर नहीं आता था। सारी प्रजा सुखी थी।

एक दिन राजा ब्रह्मदत्त ने सोचा, राज्य में बहुत शांति रहती है। दरबार में कोई शिकायत लेकर नहीं आता है। मैं शहर में जाकर सभी से मिलता हूं और पूछता हूं कि क्या सभी सुख से हैं या मेरे डर के कारण शिकायत नहीं करते हैं। यह सोचकर राजा शहर में भ्रमण के लिये निकल गया। उसे ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं मिला जो दुःखी हो या किसी को राजा से कोई भी शिकायत हो। सभी ने राजा की बहुत प्रशंसा की और उनके खिलाफ किसी ने भी कुछ नहीं बोला। राजा इस बात पर बहुत आश्चर्य-चकित हुआ।

पड़ोसी देश 'कौशल देश' के राजा का नाम मलिक था। वह भी ब्रह्मदत्त की तरह बहुत ही न्यायप्रिय और शांतिप्रिय थे। उसके देश के लोग भी उसका बहुत सम्मान करते थे। ब्रह्मदत्त के समान वे भी अपने मन के संदेह को दूर करने के लिए देश में भ्रमण के लिये निकले। उन्हें भी अपने देश में कोई भी व्यक्ति दुःखी नहीं मिला। घूमते-घूमते दोनों राजा अपने-अपने देश की सीमा पर

पहुंच गये। वहां का रास्ता इतना छोटा था कि दो रथ एक साथ नहीं निकल सकते थे।



‘कौशल देश’ के राजा मलिक के सारथी ने राजा ब्रह्मदत्त के सारथी को कहा—“तुम अपना रथ पीछे कर लो।” राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने उत्तर दिया—“तुम्हें पता नहीं वाराणसी के राजा ब्रह्मदत्त मेरे रथ पर बैठे हैं। तुम अपना रथ पीछे करो। ‘राजा मलिक’ के सारथी ने भी कहा—“कौशल देश के राजा मलिक मेरे रथ पर बैठे हैं।”

राजा ब्रह्मदत्त का सारथी सोच में पड़ गया कि यह भी राजा है, अब क्या किया जाये? उसके दिमाग में एक विचार आया कि क्यों न इनकी उम्र पूछी जाये। जिसकी उम्र कम होगी वही अपने रथ को पीछे कर लेगा। उसने राजा की उम्र पूछी तो दोनों राजाओं की उम्र एक समान ही थी। अब ब्रह्मदत्त के सारथी ने राजा मलिक की सेना, सम्पत्ति, राज्य और प्रसिद्धि आदि के विषय में पूछा, तो वह भी दोनों की एक जैसी ही थी।

राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने सोचा, “अब क्या किया जाये?” सब कुछ तो एक ही समान है। अब उसने पूछा-“आपके राजा दोषी को कैसे सजा देते हैं?”

राजा मलिक के सारथी ने उत्तर दिया-“मेरे राजा क्रूर व्यक्ति को क्रूरता से, दुष्ट व्यक्ति को दुष्टता से तथा दयालु व्यक्ति को दयालुता से सजा देते हैं। मेरे राजा जैसा कोई राजा नहीं है। इसलिये तुम अपना रथ पीछे कर लो।”

वाराणसी के राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने जब यह सुना तब वह बोला-“मेरे राजा क्रोध नहीं करते। बुराई आराम से सुनते हैं और बुराई को अच्छाई में बदलने की कोशिश करते हैं। झूठ को सच से समाप्त करते हैं। लोभी को लोभ से नहीं, उसकी सहायता कर उसका लोभ दूर करते हैं। इसलिये तुम ही अपना रथ हटा लो और हमें रास्ता दो।”

यह सुनकर राजा मलिक और उनके सारथी ने रथ से उतरकर राजा ब्रह्मदत्त को प्रणाम किया और अपने रथ को पीछे कर राजा ब्रह्मदत्त को रास्ता दिया।

शिक्षा: बुराई को बुराई से नहीं बल्कि अच्छाई से खत्म किया जा सकता है।

शक्तिमान हाथी

वाराणसी के पास एक गांव में लगभग पांच सौ बढ़ई रहते थे। वह सभी नदी के पास ही जंगल में रहते थे और लकड़ियां काटकर, उन्हें बेचकर अपनी जीविका कमाते थे।

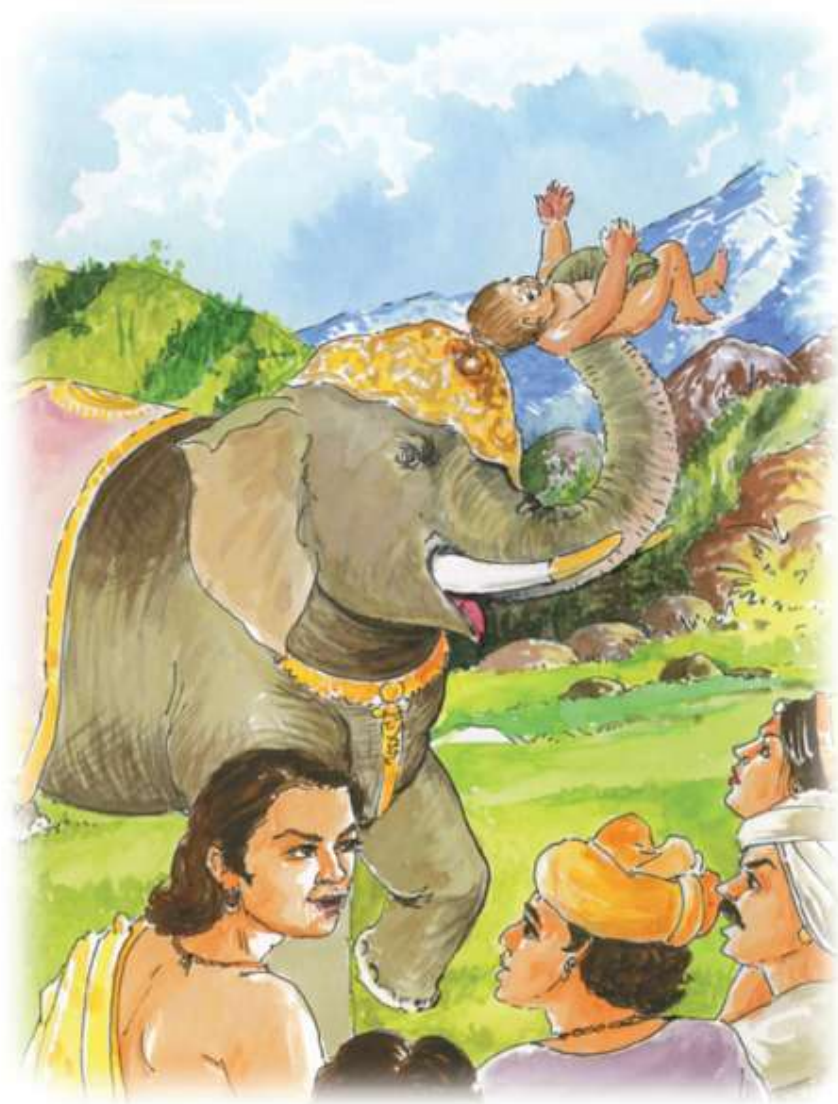
उसी जंगल में कुछ हाथी रहते थे, जो पानी पीने के लिए नदी में जाया करते थे। एक दिन हाथी के पैर में लकड़ी का टुकड़ा गड़ गया जिससे उसे घाव हो गया। घाव के कारण हाथी से चला भी नहीं जा रहा था। बढ़इयों ने उसे देखा तो उसके एक पैर से लकड़ी का टुकड़ा निकालकर घाव को साफ कर उसमें दवाई लगाकर पट्टी बांध दी। कुछ समय बाद हाथी का घाव ठीक हो गया।

हाथी भी बढ़इयों का बदला चुकाने के लिए उनकी काटी हुई लकड़ियों को सूंड में उठाकर ठीक स्थान पर रखने लगा।

हाथी का एक बच्चा बहुत सुन्दर और सफेद रंग का था। जब वह बच्चा बड़ा होने लगा, तब वह बढ़इयों के पास गया और अपना बच्चा उन्हें देते हुए बोला- “तुम लोगों ने मेरा जीवन बचाया है। मैं अब बूढ़ा होने लगा हूं, इसलिए आज से मेरा पुत्र तुम लोगों की सहायता करेगा।” यह कहकर वह जंगल में चला गया।

उस दिन से सफेद हाथी का बच्चा बढ़इयों के साथ काम करने लगा। काम समाप्त होने के बाद वह बढ़इयों के बच्चों के साथ खेलता तथा नदी में नहाता। इसी प्रकार दिन बीतते गये और वह बहुत सुंदर और बड़ा शक्तिशाली हाथी बन गया था।

एक दिन राजा के महावतों ने उस सफेद हाथी को नदी में नहाते हुए देखा। वह चांदी की तरह चमक रहा था। महावतों ने जब महल में जाकर राजा को सफेद हाथी के बारे में बताया, तो राजा उसी वक्त अपने हाथी पर बैठकर जंगल में सफेद हाथी देखने चल दिया। जैसे ही बड़इयों ने राजा को वहां देखा, वे दौड़कर आये और राजा को प्रणाम करके पूछने लगे- “महाराज! आप यहां कैसे? हमें ही दरबार में बुला लेते।”



राजा बोला- “मैं तो इस सफेद हाथी के बारे में सुनकर इसे लेने के लिये आया हूं।”

लेकिन हाथी राजा के साथ जाने को तैयार नहीं हुआ और बोला-
“मैं आपके साथ नहीं जा सकता। मैं तो केवल इन बढ़इयों की
सेवा करने के लिये यहां हूं।”

राजा बोले- “मैं इन बढ़इयों की सहायता के लिये सोने के सिक्के,
जमीन, कपड़े और जरूरत की सारी चीजें देने को तैयार हूं।” यह
बात सुनकर सफेद हाथी राजा के साथ जाने को तैयार हो गया।

राजा ने महल में लौटकर उसके रहने एवं खाने-पीने का विशेष
प्रबंध किया। उसे नए कपड़ों और आभूषणों से सजा दिया। राजा
अब उस पर ही सवारी करने लगा। वह राजा का प्रिय हाथी बन
गया। हाथी भी राजा को प्यार करने लगा।

समय बीतता गया। रानी गर्भवती हुई। इससे पहले कि वह बच्चे
को जन्म देती; राजा की मृत्यु हो गई। राजा की मृत्यु के बारे में
हाथी को कुछ नहीं बताया गया क्योंकि वह राजा को बहुत प्यार
करता था।

यह बात पड़ोसी देश के राजा ‘कौशल’ को पता चली तो उसने
आक्रमण कर दिया। यह देखकर सारे मंत्री साथ मिलकर राजा
‘कौशल’ के दरबार में गये और बोले- “हमारी रानी सात दिनों में
बच्चे को जन्म देने वाली हैं। अगर रानी बेटे को जन्म देंगी, तब हम
अपसे युद्ध करेंगे, नहीं तो हम अपने देश को आपके हवाले कर
देंगे। कृपया सात दिनों तक प्रतीक्षा कीजिये”। राजा ‘कौशल’
इस पर सहमत हो गये।

सात दिन बाद रानी ने बेटे को जन्म दिया। सभी लोग बहुत खुश
हो गये और उनमें एक नया उत्साह आ गया। सेना और प्रजा सभी
अपने सामर्थ्य के अनुसार युद्ध के लिये तैयार हो गये। मंत्रियों ने
रानी को सुझाव दिया कि अब सफेद हाथी को यह बात बता देनी

चाहिये। रानी इस बात पर सहमत हो गई और वह बच्चे को गोद में उठाकर सफेद हाथी के पास पहुंची। बच्चे को हाथी के पैरों पर रखकर हाथी से बोली- “प्यारे भाई! यह बच्चा तुम्हारे मित्र राजा का बेटा है और उनकी मृत्यु हो गई है। तुम्हारे मित्र राजा का बेटा हम तुमको देते हैं, इसकी रक्षा करना। दूसरी बात यह है कि पड़ोसी देश का राजा ‘कौशल’ युद्ध करना चाहता है। वह हमारे देश को अपने अधीन करना चाहता है। हो सकता है वह इसे मार दे और इस देश को भी अपने अधीन कर ले।

सफेद हाथी ने अपनी सूंड से, बहुत प्यार से बच्चे को चूमकर अपना प्यार दिखाया। उसने रानी को अपनी पीठ पर बैठाया, रानी ने अपने बच्चे को अपनी गोद में लिया। सफेद हाथी उन्हें लेकर राजा ‘कौशल’ की सेना की ओर क्रोध से चल दिया। उसके पीछे-पीछे मंत्री-सेनापति तथा प्रजा के सभी लोग चल दिये।

सफेद हाथी बहुत जोर से चिंघाड़ा, जिससे कौशल राजा के सैनिक डर कर इदर-उदर भागने लगे। हाथी क्रोधित होकर, राजा के सामने पहुंचा और अपनी सूंड से उसे उठाकर जमीन में पटक दिया। राजा कौशल मारा गया। उसके सभी सैनिक भाग गये। युद्ध समाप्त हो गया। सात वर्षों तक सभी मंत्रियों ने मिलकर राज्य भार संभाला फिर राजकुमार को राजा बनाया।

शिक्षा: मनुष्यों की तरह जानवरों में भी प्रेम भरा दिल होता है जो अच्छे-बुरे की पहचान करा वफादारी करना भी सिखाता है।

कहानियों द्वारा बच्चों का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण हो यही इस पुस्तक का प्रेरणास्रोत है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में दादा-दादी, नाना-नानी बच्चों का कहानियों के माध्यम से चारित्रिक, संस्कारिक निर्माण करते थे। परंतु आजकल एकल परिवार समय के अभाव में अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

हमारे प्रकाशन का प्रयास है कि अभिभावक अपने बच्चों को सुसंस्कारित, चरित्रवान और योग्य नागरिक बना सकें एवं बच्चे भी इस पुस्तक को पढ़कर लाभान्वित हों।

सभी जातक कथाएं मनुष्य और पशु पात्र पर आधारित हैं। ये कहानियां लोकव्यवहार और सामाजिक परम्परा से परिचित करवाती हैं। जातक कथाओं से हमें विभिन्न प्रकार की शिक्षा मिलती है। ये कथाएं विश्व को लगभग सभी भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। जातक कथाएं हमें नम्रता, धैर्य, ईमानदारी, दूसरों को सम्मान देना और जिन्दगी को हिम्मत से जीने की सीख देती हैं।